Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

"झगड़ा
मांहो मांहि निजर पड्यां खीजे,
त्यांने उपमां स्वान तणी दीजे।
एक-दूसरे को देखते ही जो लड़ने लगते हैं, उनकी तुलना कुत्तों से होती है।
–आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली ● वर्ष 26 ● अंक 49 ● 08 सितम्बर - 14 सितम्बर, 2025 प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 06-09-2025 ● पेज 20 ₹ 10 रुपये

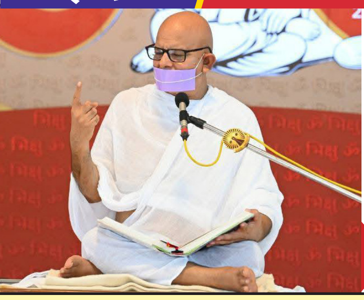

संवर और निर्जरा की साधना से लड़ा जा सकता है कर्मों से मुक्ति का युद्ध : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

जप, ध्यान और स्वाध्याय से समय को बनाएं सार्थक : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 14

Address Here

सुयोग्य उत्तराधिकारी का गरिमापूर्ण चिंतन है 'विकास महोत्सव' : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
01 सितम्बर, 2025

भाद्रव शुक्ला नवमी का दिन। जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्म संघ में यह दिवस 'विकास महोत्सव' के रूप में प्रतिष्ठित है। अहमदाबाद के पास कोबा में स्थित प्रेक्षा विश्व भारती के वीर भिक्षु समवसरण में चतुर्विध धर्म संघ को पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए तेरापंथ धर्म संघ के एकादशमाधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कहा कि हमारे यहां दो महोत्सव चल रहे हैं। शेष काल में वर्धमान महोत्सव और चातुर्मास काल में विकास महोत्सव का आयोजन होता है। दोनों में काफी समानता है। विकास महोत्सव चातुर्मास काल में आता है तो बहिर्विहारी साधु-साध्वियां, समणियां इसमें सम्मिलित नहीं हो सकें, तो वर्धमान महोत्सव, जो मर्यादा महोत्सव के थोड़ा पहले आयोजित होता है, उसमें वे बहिर्विहारी साधु-साध्वियां, समणियां सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त करते हैं।

विकास महोत्सव एक तिथि से जुड़ा हुआ है। विकास महोत्सव की देन में गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का योगदान है। एक आचार्य अपने आचार्य पद को छोड़ देते हैं, यह एक विशेष बात है। हमारी परंपरा में सामान्यतः आचार्य पद जीवन भर के लिए रहता है। ऐसी स्थिति में आचार्यश्री तुलसी ने आचार्य पद का विसर्जन किया, उसमें संभावना की जा सकती है कि आचार्यश्री तुलसी ने संघ हित देखा होगा, यद्यपि और भी कारण हो सकते हैं।

आचार्यश्री तुलसी का हमारी परंपरा में आज तक के इतिहास में सर्वाधिक आचार्य काल रहा है। उन्होंने लगभग 80 वर्ष की अवस्था में आचार्य पद का विसर्जन किया और युवाचार्य महाप्रज्ञजी को आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित किया। विकास महोत्सव की स्थापना की पृष्ठभूमि में त्याग और विसर्जन है। पद विसर्जन के पश्चात् गुरुदेव का यह कथन कि अब मेरा पट्टोत्सव नहीं मनाया जाए, यह मेरी दृष्टि में एक अच्छा प्रशंसनीय चिंतन था। ऐसा चिंतन, परंपरा को अच्छी रखने की विचारशीलता का द्योतक था। इस चिंतन की मैं विनयपूर्ण अनुमोदना करता हूं। दूसरी ओर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की यह बात कि पट्टोत्सव भले न मने, परन्तु जीवन काल में आचार्य पद छोड़ने जैसा जो बड़ा कार्य हुआ है, उसकी स्मृति में "विकास महोत्सव" का आयोजन हो — यह भी एक सुयोग्य उत्तराधिकारी का गरिमापूर्ण चिंतन है। इन दो विचारों से विकास महोत्सव का जन्म हुआ है।

पूज्य गुरुदेव द्वारा आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के संयुक्त हस्ताक्षरों से युक्त विकास महोत्सव के आधार पत्र का वाचन किया गया।

(शेष पेज 17 पर)

साधना के छोटे-छोटे उपायों से जीतें आत्मा को : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
30 अगस्त, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में युद्ध की बात चलती है। दो राष्ट्रों के बीच युद्ध हो जाता है, परिवारों में कलह हो जाती है, व्यक्ति-व्यक्ति में भी लड़ाई हो सकती है। आयारो आगम में आध्यात्मिक युद्ध की बात बताई है— कि आत्मा के साथ युद्ध करो, बाहर के युद्ध से तुम्हें क्या मतलब? आत्मा के साथ जो कार्मण शरीर है, उसके साथ युद्ध करो। इस आत्म-युद्ध में किसी बाहरी शस्त्र की आवश्यकता नहीं है।

आठ प्रकार की आत्माएं होती हैं, इनमें एक कषाय आत्मा है और योग आत्मा में अशुभ योग आत्मा, दर्शन आत्मा में मिथ्यादर्शन आत्मा है। हमें इन आत्माओं को खत्म करना है, नष्ट करना है। इन आत्माओं को नष्ट करने के लिए हमें शुभ योग आत्मा का उपयोग करना है, सम्यक्दर्शन आत्मा को पुष्ट करना है और चारित्र आत्मा का उपयोग करना है। इनसे अशुभ योग अस्तित्वहीन बन सकेगा, मिथ्यादर्शन आत्मा खत्म हो सकेगी और कषाय आत्मा नष्ट हो सकेगी।

चौथे गुणस्थान अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में भी पूरी तरह से मिथ्यादर्शन आत्मा और सम्यग्-मिथ्या दृष्टि आत्मा की समाप्ति हो सकती है और युद्ध में एक बड़ी सफलता प्राप्त हो सकती है। चारित्र ग्रहण कर लें और थोड़ा आगे सप्तम गुणस्थान में ज्यादा रहना हो जाए तो अशुभ योग आत्मा भी नियंत्रण में आ सकती है। कषाय आत्मा का अस्तित्व दसवें गुणस्थान तक रहता है और ग्यारहवें गुणस्थान में भी कषाय भीतर में रहता है। बारहवें गुणस्थान में कषाय आत्मा पूर्णतया विनष्ट हो जाती है। योग आत्मा पूर्ण रूप से चौदहवें गुणस्थान में नष्ट होती है।

यह आत्म-युद्ध पूरी तरह से अहिंसात्मक है। यदि क्रोध, मान, माया, लोभ कषायों को पूर्णतया नष्ट कर दिया जाए तो न तो अशुभ योग रह पाएगा और न ही मिथ्यादर्शन। क्रोध को जीतना है तो उपशम की साधना करें, अहंकार को जीतने के लिए मार्दव की अनुप्रेक्षा का अभ्यास करें, माया-छलना को जीतने के लिए आर्जव का प्रयास करें और लोभ को जीतने के लिए संतोष की आराधना करें।

(शेष पेज 17 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
08 सितम्बर - 14 सितम्बर, 2025

उत्कृष्ट आराधना का दिन है भगवती संवत्सरी का दिन : आचार्यश्री महाश्रमण

भगवती संवत्सरी पर महावीर की अध्यात्म यात्रा को साधना का आदर्श बनाने की मिली प्रेरणा

कोबा, गांधीनगर।
27 अगस्त, 2025

पर्युषण पर्व के शिखर दिवस 'भगवती संवत्सरी' महापर्व पर जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान शिखर पुरुष, अध्यात्मवेत्ता, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण ने पर्युषण महापर्व पर प्रारंभ किए गए प्रसंग 'महावीर की अध्यात्म यात्रा' के क्रम को आगे बढ़ाते हुए कहा कि जैन आम्नाय की दो परंपराएं हैं - दिगंबर और श्वेतांबर। इनमें जैन श्वेतांबर परंपरा में संवत्सरी भाद्रव शुक्ला चतुर्थी अथवा पंचमी को आयोजित होती है। आज भगवती संवत्सरी की आराधना का दिन है। एक वर्ष में अनेक पर्व विभिन्न तिथियों को आते हैं परन्तु भगवती संवत्सरी के दिन के अलावा आध्यात्मिक आराधना की दृष्टि से हमारी परंपरा में इससे बड़ा पूरे वर्ष में कोई दिन नहीं है। भगवती संवत्सरी की पृष्ठभूमि के रूप में पूर्व के सात दिनों में आराधना हो जाती है और आज का दिन उत्कृष्ट आराधना का दिन होता है। आज का दिन क्षमा पर्व, मैत्री पर्व के रूप में भी है, आज के दिन चौरासी लाख जीव योनियों से खमतखामणा होता है, परस्पर भी खमतखामणा सैद्धांतिक रूप में होता है और व्यावहारिक खमतखामणा कल और उसके बाद भी होता रहता है। आज का दिन साधु-साध्वियों के लिए गोचरी-पानी से मुक्त दिन होता है। यह उपवास और तपस्या का दिन है। गृहस्थ भी आज के दिन उपवास और उपवास के साथ पौषध करते हैं। यह वर्ष में एक दिन ऐसा है, जो श्रद्धेय बन गया है। यह आत्मचिंतन का भी दिन है। पूज्यवर ने संवत्सरी से संबद्ध गीतों का संगान किया। जैन धर्म में अहिंसा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि छोटी-छोटी बातों जैसे हरियाली पर नहीं चलना, वर्षा में गोचरी नहीं जाना, स्थावर काय के जीवों की हिंसा से बचने का विधि विधान है। साधु के पांच महाव्रत और छठे रात्रि भोजन-पानी विरमण का कड़ाई से पालन करने का प्रावधान है। श्रावक-श्राविकाएं भी धर्म से जुड़े हुए हैं, बच्चों और युवकों में धर्म के संस्कार पुष्ट रहने चाहिए। बच्चे नवकार मंत्र को याद भी करें और समय-समय पर इसका जप भी करें। श्रावक-श्राविकाएं अपने साथ-साथ बच्चों के भी भोजन की शुद्धता के प्रति जागरूकता रखें। बच्चे कहीं भी पढ़ें, उनके भोजन में कहीं भी नॉनवेज का समावेश नहीं होना चाहिए। दवाइयों इत्यादि में नॉनवेज हो तो उनके विकल्प देखने चाहिए आचार्यश्री ने "भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा" के वर्णन प्रसंग को आगे बढ़ाया और फरमाया कि भगवान महावीर की आत्मा अपने अंतिम 27वें भव में वर्धमान के रूप में आई। वर्धमान जब आठ वर्ष के हुए तो उन्हें पाठशाला में कलाचार्यजी के पास पढ़ने के लिए ले जाया गया पर पहले दिन ही वर्धमान को पाठशाला जाने से मुक्ति मिल गई।

पूज्य प्रवर ने फरमाया कि बचपन का समय विकास का होता है। जीवन का पहला भाग विद्या के अर्जन का विशेष समय होता है। हमारे अनेक चारित्रात्माएं जो किशोरावस्था में हैं, उन्हें अपने भीतर ज्ञान के विकास का खूब अच्छा प्रयास करना चाहिए। वर्धमान और बड़े हुए और माता-पिता ने चिंतन करके नरेश समरवीर की पुत्री 'यशोदा' के साथ वर्धमान का विवाह कर दिया। यद्यपि दिगंबर परंपरा में 'महावीर' के विवाह की बात नहीं है। वर्धमान की एक पुत्री हुई, जिसका नाम था प्रियदर्शना। एक दोहित्री भी हुई जिसका नाम था शेषवती। (शेष पेज 16 पर)

संवर और निर्जरा की साधना से लड़ा जा सकता है कर्मों से मुक्ति का युद्ध : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
31 अगस्त,, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि "युद्ध के योग्य सामग्री निश्चित ही दुर्लभ है।" यहाँ जिस युद्ध की बात है, वह बाहरी युद्ध नहीं है—न दो राष्ट्रों के बीच का युद्ध और न ही परिवारों में होने वाला कलह। यहाँ आत्म-युद्ध की चर्चा है।

आत्म-युद्ध का तात्पर्य है—कर्मों द्वारा आत्मा पर जो कब्जा है, उससे आत्मा को मुक्त करना। अनादिकाल से आत्मा कर्मों से बंधी हुई है। ये कर्म आत्मा को विकृत कर देते हैं, ज्ञान-दर्शन को आवृत कर देते हैं, शक्ति को बाधित कर देते हैं और जन्म-मृत्यु के चक्र में घुमाते रहते हैं। परिणामस्वरूप जीव दुःख का अनुभव करता है। इस दुःख की जड़ कर्म हैं। अतः आवश्यक है कि आत्मा को कर्मों के कब्जे से मुक्त किया जाए। जब यह स्थिति बन जाएगी, तब न दुःख रहेगा और न जन्म-मृत्यु का चक्र। धर्म और अध्यात्म की सारी साधना वस्तुतः कर्मों से मुक्ति का युद्ध है। यह युद्ध संवर और निर्जरा की साधना से लड़ा जा सकता है। शास्त्रों में कहा गया है कि यह महान युद्ध केवल मनुष्य योनि में ही संभव है। औदारिक शरीर के माध्यम से तपस्या, साधना, धर्माराधना और धार्मिक सेवा द्वारा कर्मों को काटा जा सकता है और संवर से नए कर्मों के आगमन को रोका जा सकता है। संवर की साधना तिर्यंच गति में भी हो सकती है, लेकिन वह अपर्याप्त है। मनुष्य जीवन में ही इसकी परिपूर्ण साधना संभव है। इसलिए यह मनुष्य जन्म अत्यंत दुर्लभ है। शास्त्रों में चार वस्तुएँ दुर्लभ बताई गई हैं—पहला, मनुष्य जन्म; दूसरा, धर्म-श्रवण का अवसर; तीसरा, धर्म पर श्रद्धा; और चौथा, संयम में पराक्रम। जिनके पास मनुष्य जन्म है, उनके लिए यह एक युद्ध की सामग्री पहले से उपलब्ध है।

आठ दिनों का अष्टान्हिक कार्यक्रम भी इस युद्ध की प्रक्रिया का ही एक भाग था। सामूहिक रूप में साधना हुई और भगवती संवत्सरी उस कार्यक्रम का उत्कृष्ट दिन रहा। भगवान महावीर ने इसी औदारिक शरीर का उपयोग कर परम सुख को प्राप्त किया। शब्द, गंध, रूप और स्पर्श से मिलने वाले पौद्गलिक सुख नश्वर और भंगुर हैं। वे सुख नहीं, दुःख का कारण बन सकते हैं। धर्मयुद्ध अथवा आत्म-युद्ध में पौद्गलिक सुखों का स्थान नहीं है, वहाँ केवल अध्यात्म-सुख का महत्व है।

मनुष्य के चित्त में शांति और मनोबल बना रहना चाहिए। शारीरिक स्वस्थता के साथ मानसिक प्रसन्नता एक बड़ी उपलब्धि है। यदि कठिनाई भी आए तो हमें धैर्य बनाए रखना चाहिए। इस मानव जीवन में हमें धर्माराधना के लिए समय अवश्य निकालना चाहिए। सामायिक का समय न भी हो, तो संवर की साधना की जा सकती है। भले ही हम कर्मों के साथ बड़ा युद्ध न कर सकें, पर धीरे-धीरे करते हुए कर्म रूपी चट्टान को तोड़ने में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

संसारी अवस्था में जीव के साथ तैजस और कार्मण शरीर चलते हैं। कार्मण शरीर के आधार पर ही अगले जन्म में पुण्य और पाप का फल मिलता है। इसलिए हमें यह सोचना चाहिए कि वर्तमान की सुख-सुविधाएँ पूर्व जन्म के पुण्यों का भोग हैं, लेकिन भविष्य के लिए हम क्या संचय कर रहे हैं? और इससे भी ऊँची साधना है—संवर और निर्जरा—जिससे पुण्य और पाप से ऊपर उठकर मोक्ष की प्राप्ति होती है। अतः इस मानव जीवन का सदुपयोग आत्मा की शुद्धि हेतु करना चाहिए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने नव तत्त्वों में से 'निर्जरा' और उसके बारह भेदों में 'विनय' को व्याख्यायित कर उसके महत्व पर प्रकाश डाला। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में रतनगढ़-कोलकाता के स्व. बुद्धमल दुगड़ का परिवार आध्यात्मिक संबल हेतु उपस्थित हुआ। आचार्यश्री ने परिजनों को आध्यात्मिक संबल प्रदान किया। साध्वीप्रमुखाश्री एवं मुख्य मुनि प्रवर ने भी दुगड़ परिवार को आत्मिक शक्ति प्रदान की। मुनि दिनेश कुमारजी, मुनि कुमार श्रमणजी, मुनि योगेश कुमारजी, मुनि कीर्ति कुमारजी, मुनि विश्रुत कुमारजी और मुनि ध्यान मूर्तिजी ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी।

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव- रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0 का कंट्रोल रूम उद्घाटन

अणुव्रत भवन, दिल्ली।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव — रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0 के कंट्रोल रूम का उद्घाटन जैन संस्कार विधि द्वारा अणुव्रत भवन, दिल्ली में हुआ।

इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने सभी का स्वागत करते हुए रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0 के बारे में विस्तृत जानकारी दी। महामंत्री अमित नाहटा ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए इस महाअभियान में जुड़ने का आह्वान किया। मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के सह-प्रभारी सौरभ पटावरी ने इस महाअभियान के स्वर्णिम इतिहास की जानकारी देते हुए सभी को इस मानव सेवा, राष्ट्रसेवा और धर्मसंघ की प्रभावना बढ़ाने वाले आयाम में जुड़ने के लिए प्रेरित किया और कंट्रोल रूम के 4C फार्मूला को समझाया।

कंट्रोल रूम प्रभारी विनय लिंगा और अंकुर लुणिया ने कंट्रोल रूम और टीम के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

इस अवसर पर अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के मुख्य न्यासी के.सी. जैन, समाजसेवी संपत मल नाहटा, प्रदीप संचेती (पूर्व कोषाध्यक्ष अभातेयुप), बाबूलाल गोलछा (अध्यक्ष, अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली), अरुण संचेती (पूर्व महामंत्री अभातेयुप), प्रमोद घोड़ावत (महामंत्री, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली), पवन श्यामसुखा (अध्यक्ष, तेयुप दिल्ली), क्रांति बरडिया (अध्यक्ष, गांधीनगर दिल्ली) आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अभातेयुप साथी विकास सुराणा ने किया।

ज्ञानार्थी बनें नम्र, शालीन और लायक

मदुरै।

तेरापंथ भवन में मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नन्हे-मुन्ने बालकों द्वारा नमस्कार महामंत्र की सुंदर मुद्रा सहित नृत्य प्रस्तुति से हुआ।

ज्ञानशाला प्रभारी उपासक धनराज लोढ़ा ने स्वागत-अभिनंदन करते हुए कहा कि ज्ञानशाला बच्चों को केवल बुनियादी शिक्षा ही नहीं, बल्कि नैतिक मूल्य, अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का भी बोध कराती है।

बालकों ने 25 बोल पर आधारित आकर्षक लघु नाटिका प्रस्तुत की, वहीं बड़े बच्चों ने Usage of Mobile विषय पर प्रभावशाली प्रस्तुति दी। मुनि हेमंत कुमार जी ने प्रेरक उदाहरणों के माध्यम से समझाया कि बच्चों को ज्ञानशाला भेजना क्यों आवश्यक है— इससे उनका शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है।

मुनि श्री हिमांशु कुमार जी ने ज्ञानशाला का गूढ़ अर्थ स्पष्ट किया— ज्ञा – ज्ञानी बनो, न – नम्र बनो, शा – शालीन बनो और ला – लायक बनो। उन्होंने बालकों को नियमित रूप से ज्ञानशाला आने की प्रेरणा प्रदान की।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएँ बबीता लोढ़ा, दीपिका फुलफगर, मधु पारख, संतोष बोकडिया एवं सुनीता कोठारी का कार्यक्रम की सफलता में सराहनीय सहयोग रहा।

कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं विवरण प्रस्तुति बबीता लोढ़ा ने दी।

- इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।
- आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण

सफल जीवन का आधार–अनुशासन

राजराजेश्वरी नगर

साध्वी पुण्ययशा जी के पावन सान्निध्य में 'भिक्षु शासन : नंदनवन' कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें "आचार्य श्री भिक्षु की अनुशासन शैली" विषय पर प्रतिपादन करते हुए साध्वी पुण्ययशा जी ने अपने उद्बोधन में कहा – "आचार्य भिक्षु युगद्रष्टा महापुरुष थे। वे अपने युग में क्रांतिकारी आचार्य के रूप में पहचाने गए।

अनुशासन को संगठन का अनिवार्य पहलू बताते हुए उन्होंने कहा कि आत्मशुद्धि के लिए अनुशासन जितना आवश्यक है, उतना ही संगठन की दृढ़ता के लिए भी उसका महत्व है। परिवार, समाज एवं राष्ट्र – किसी भी परिवेश में, समूह चेतना के स्तर पर सफल जीवन वही जी सकता है जो अनुशासन में रहना जानता है।

पारिवारिक विघटन, सामाजिक टूटन और राष्ट्रीयता के बिखराव का प्रमुख कारण अनुशासन का अभाव है। जहाँ आत्मानुशासन के संस्कार न हों, अनुशासन के प्रति आस्था न हो और अनुशासन के परिणाम पर विश्वास न हो, वहाँ सामूहिक जीवन भी समस्या बन जाता है। जीवन के हर पहलू के साथ अनुशासन का महत्व जुड़ा है।"

साध्वी बोधिप्रभा जी ने एक कविता द्वारा सभी को अनुशासन के साँचे में ढलकर जीवन को निखारने की प्रेरणा दी। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में साध्वीश्री की प्रेरणा से श्रावक-श्राविकाओं द्वारा लगभग 251 सामायिक और 250 घंटे का मौन साधा गया। अढ़ाई सौ प्रत्याख्यान तप की दो लड़ियाँ (2 अढ़ाई सौ पचक्खाण एवं 10 पचक्खाण की सात लड़ियाँ) करवाई गईं, जिसमें लगभग 580 तपस्वियों की सहभागिता रही।

सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया एवं अढ़ाई सौ पचक्खाण में भाग लेने वाले सभी श्रावकों की अनुमोदना की। सफल संचालन गुलाब बाँठिया ने किया।

त्याग, वैराग्य और संयम का अभिनंदन

यशवंतपुर, बेंगलुरु।

साध्वी सोमयशाजी के सान्निध्य में दीक्षार्थियों का अभिनंदन समारोह एवं प्रवचन तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह अभिनंदन त्याग, वैराग्य और संयम का अभिनंदन है। यही त्याग और संयम आत्मा के प्रकाश को उजागर करते हैं। आत्मा के प्रकाश से ही सम्यक्त्व का बीज अंकुरित होता है। जितना वैराग्य पुष्ट होता है, उतना ही यह बीज पल्लवित होता है। आज के भौतिक युग में सम्यक्त्व की प्राप्ति ही वैराग्य को पुष्ट बनाती है। त्याग और वैराग्य के पथ पर बढ़ना बहुत बड़ी साधना है।

साध्वी डॉ. सरलयशाजी एवं साध्वी ऋषिप्रभाजी ने दीक्षार्थियों की संयम यात्रा के लिए मंगलकामनाएं व्यक्त कीं और श्रावकों से आह्वान किया कि प्रत्येक व्यक्ति को नित्य यह भावना करनी चाहिए कि वह भी संयम पथ का राही बने। कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगल भावना गीत का संगान किया गया।

तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष विजय राज बरडिया ने स्वागत करते हुए मुमुक्षुओं के आध्यात्मिक भविष्य की मंगल भावना व्यक्त की। महिला मंडल की निवर्तमान अध्यक्ष मीना दक ने कहा कि मुमुक्षु वैराग्य के रंग से जीवन को संवारने वाले कलाकार हैं। मुमुक्षु प्रेक्षा ने 'हर पल जीवन में एक मौका है' गीत के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए। मुमुक्षु प्रीत ने कहा कि इस संसार में व्यक्ति अकेला आता है और अकेला ही जाता है, परंतु जो व्यक्ति अपने जीवन में धर्म का आचरण करता है वही संयम पथ पर अग्रसर हो सकता है। मुमुक्षु प्रीत का परिचय सभा उपाध्यक्ष कुंदन गन्ना ने तथा मुमुक्षु प्रेक्षा का परिचय महिला मंडल अध्यक्ष रेखा पितलिया ने दिया। तुलसी चेतना केन्द्र के अध्यक्ष मदन बोराणा ने दीक्षार्थियों की निर्विघ्न संयम यात्रा की मंगलकामना की। गगन बरडिया ने गीत प्रस्तुत किया तथा उपासक महेंद्र दक और गजेंद्र कोचर ने विचार रखे। तेयुप मंत्री अभिषेक पोखरना ने आभार प्रकट किया। सभा मंत्री अनिल दक ने संचालन कर दीक्षार्थियों से जुड़े संस्मरण साझा किए। साहित्य एवं जैन पट्ट द्वारा मुमुक्षु भाई-बहन का अभिनंदन सभाध्यक्ष सुरेश बरडिया, पदाधिकारीगण, पूर्व अध्यक्ष प्रकाश बाबेल, महिला मंडल पदाधिकारी, तेयुप पदाधिकारी, कैलाश बोराणा, सुरेश पितलिया एवं चातुर्मास प्रायोजक बोराणा परिवार ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
08 सितम्बर - 14 सितम्बर, 2025

संक्षिप्त खबर

जीवन विज्ञान से व्यक्तित्व विकास

हैदराबाद। महबूब कॉलेज में अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान के प्रसार हेतु 'जीने की कला तथा विद्यार्थी जीवन उत्थान' विषयक कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत से हुआ।

निर्मला बैद ने कहा कि शिक्षा से बौद्धिक विकास तो हुआ है और अनेक डॉक्टर, इंजीनियर, वकील जैसे प्रबुद्ध व्यक्तित्व तैयार हो रहे हैं, लेकिन भावनात्मक विकास के अभाव में हिंसा, भ्रष्टाचार, आतंकवाद और आत्महत्या जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। विद्यार्थी जीवन में विनम्रता, अनुशासन, सहनशीलता, ईमानदारी और अहिंसा जैसे गुणों का विकास आवश्यक है। उन्होंने बताया कि आज अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या और झगड़े आम हो गए हैं। इनसे बचने के लिए विभिन्न प्रयोग करवाए गए। मुद्रा विज्ञान के लाभ समझाए गए।

उदाहरण द्वारा बताया गया कि जैसे जड़ों को सींचने से बगीचा हरा-भरा रहता है, वैसे ही जीवन में मूल्यों का पोषण करने से व्यक्तित्व पुष्पित-पल्लवित होता है। नशे के दुष्परिणाम स्पष्ट किए गए। धार्मिक सद्भावना, ईमानदारी, मित्रता, पर्यावरण संरक्षण तथा टाइम मैनेजमेंट के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

बारह–व्रत कार्यशाला सानंद सम्पन्न

विक्रोली। तेरापंथ युवक परिषद विक्रोली द्वारा बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, विक्रोली में हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुआ। उपासक गणपत मारू ने इस कार्यशाला में धर्म, संयम और आत्मिक शुद्धि से जुड़ी बारह व्रतों की विस्तृत जानकारी दी। व्रत दीक्षा का अर्थ है – असंयम से संयम की ओर प्रस्थान। साथ ही यह भी बताया गया कि दैनिक जीवन में जैन सिद्धांतों का पालन करने में बारह व्रत सहायता करते हैं। "क्यों? कब? कैसे?" इन प्रश्नों का भी समाधान किया। उपासक ने उपस्थित सभी श्रावक–श्राविकाओं, महिला मंडल और तेयुप के युवाओं को विशेष प्रेरणा दी कि ज्यादा से ज्यादा क्षेत्र से बारहवर्ती श्रावक बनना चाहिए। कार्यशाला का आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष मनीष बोहरा ने किया।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

सिरियारी। आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान एवं प्रेक्षा फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर का शुभारंभ मुनि धर्मेशकुमार जी के मार्गदर्शन में हुआ। शिविर का प्रारंभ प्रेक्षाध्यान गीत के सामूहिक संगान से हुआ। तत्पश्चात् मुनि अतुलकुमार जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "मानसिक एकाग्रता के अभाव में भविष्य असुरक्षित हो जाता है। हमारे मन में करोड़ों विचारों का संग्रह है, जिन्हें ध्यान साधना द्वारा नियंत्रित और समाप्त किया जा सकता है। अतः शिविर में आने वाले साधक अपने मन को साधने का प्रयास करें।" मुनि चैतन्यकुमारजी 'अमन' ने अपने उद्बोधन में कहा कि "ध्यान साधना वृत्ति-परिष्कार का अमोघ साधन है। ध्यान से मानव का चिंतन बदलता है और चिंतन बदलने पर जीवन में रूपान्तरण घटित होता है। आज समाज में जो छिपाव-दुराव और कपट की प्रवृत्ति बढ़ रही है, वह अंततः मतभेद और भटकाव का कारण बनती है। ध्यान साधना जीवन को सरल बनाने का श्रेष्ठ उपाय है।" मुनि धर्मेशकुमार जी ने साधकों को उपसम्पदा प्रदान कराते हुए कहा कि "उपसम्पदा ध्यान साधना की प्रथम दीक्षा है, जिससे आत्म-साधना का मार्ग प्रशस्त होता है। साधक मानसिक रूप से साधना के प्रति समर्पित हो जाता है। उसे मितभाषण और आहार संयम का अभ्यास करना चाहिए। समर्पित भाव से की गई साधना सदैव सुखद परिणाम देती है।" अष्ट-दिवसीय शिविर में विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 20 साधक उपस्थित हुए। शिविर के दौरान साधकों को योगासन, प्राणायाम तथा ध्यान के विविध प्रयोग करवाए गए। मुकुल भाई ने संचालन का दायित्व निभाते हुए अपने विचार रखे। व्यवस्थापक हनुमान बरड़िया ने जानकारी प्रदान करते हुए आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर संस्थान के व्यवस्थापक महावीरसिंह, बसंत कुमार, श्यामसुन्दर सहित अनेक श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

मोक्ष का सोपान है संयम

जसोल।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी भाई मनोज संकलेचा का स्वागत ओसवाल भवन में किया गया।

साध्वी रतिप्रभा जी ने फरमाया कि सन्यास जीवन आत्मा की विजय है। संयम का जीवन मोक्ष का सोपान है, आत्मोन्नति का राजमार्ग है, सद्गुणों का संवाहक है, जीवन निर्माण की उत्तम प्रयोगशाला है। उभरते यौवन में संयम जीवन स्वीकार करना आंतरिक वैराग्य का रसपान है। वैराग्य से भीगा जीवन ही उत्तम लक्ष्य की ओर प्रस्थान कर सकता है।

साध्वी कलाप्रभा जी ने कहा कि संयम जीवन ज्ञात से अज्ञात की ओर प्रस्थान है। मृत्यु से अमरत्व की ओर चरण-न्यास है।

अंधकार से प्रकाश की ओर गतिशीलता सुंदर संकल्प है। इस इक्कीसवीं सदी में सन्यास जीवन का संकल्प ही महानता का प्रतीक माना जाता है। सन्यास जीवन काँटों का पथ है, पर तुम्हें फूलों की शय्या का आनंद लेना है। निरन्तर अप्रसन्नता की ओर प्रस्थान हो।

साध्वी पावनयशा जी ने सुमधुर गीत द्वारा भावाभिव्यक्ति दी। डूंगरचंद सालेचा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी ने दीक्षार्थी भाई मनोज सकलेचा के आगामी जीवन की मंगलकामना की। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने कुशलतापूर्वक मंच का संचालन किया।

मनोज्ञयशा जी ने दीक्षार्थी मनोज भाई, जो अपनी जन्मभूमि टापरा निवासी हैं, को अपनी आध्यात्मिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि संयम जीवन पाना महान सौभाग्य का सुफल है, अनन्त पुण्याई का सिंचन है, परमार्थ पथ पर चलने का मनोरथ बड़ी शूरवीरता का काम है।

तेरापंथ महिला मंडल व कन्या मंडल ने मंगल आरती की। मंगल भावना का कार्यक्रम बड़ा रोचक रहा।

दूसरे चरण में बुद्धि परीक्षा प्रतियोगिता रखी गई। शर्त थी कि युगल जोड़ी हो – चाहे मां-बेटी, चाहे देवरानी-जेठानी, चाहे दंपति। प्रतियोगिता बड़ी रुचिकर रही। दोनों कार्यक्रम प्रेरणादायक रहे। इस क्विज प्रतियोगिता में 55 भाई-बहनों ने भाग लिया, जो भगवान महावीर पर आधारित प्रश्नमंच था।

आह्वान कार्यशाला का आयोजन

मदुरै।

मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में "आह्वान कार्यशाला" का सफल आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला की शुरुआत मुनि हिमांशु कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ की गई।

मुनि हेमंत कुमार जी द्वारा प्रस्तुति दी गई। 'सुपर सेल्फी एक्टिविटी' विशेष आकर्षण का केंद्र रही। इस रोचक और विचारोत्तेजक गतिविधि के माध्यम से उन्होंने "जीवन में सफलता" और "सफल जीवन" के बीच के अंतर को सरल शब्दों में स्पष्ट किया।

जीवन में सफलता का अर्थ जहाँ बाहरी उपलब्धियों–जैसे पद, प्रतिष्ठा, धन-संपत्ति–से है, वहीं सफल जीवन का अर्थ है–आंतरिक संतुष्टि, संबंधों में मधुरता, स्वास्थ्य, आध्यात्मिक शांति और जीवन का संपूर्ण आनंद।

मुनिश्री ने समझाया कि हर व्यक्ति अपने आप में विशिष्ट है, किंतु सामाजिक अपेक्षाओं के कारण वह स्वयं को छिपा लेता है। उन्होंने तेरापंथ के प्रमुख आयामों–जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी, जैन विश्व भारती आदि से जुड़ने का आह्वान करते हुए समाज और आत्मविकास दोनों में सक्रिय योगदान देने की प्रेरणा दी।

कार्यशाला में सभा, युवक परिषद, महिला मंडल सहित जैन एवं जैनेत्तर समाज के कई गणमान्य जन एवं साधकगण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की जानकारी महिला मंडल अध्यक्ष दीपिका फुलफगर ने दी।

पावरफुल जैनिज्म क्लास सम्पन्न

बेंगलुरु।

तेरापंथ सभा भवन, बेंगलुरु में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन एवं तेरापंथ युवक परिषद्, बेंगलुरु के आयोजन में "पावरफुल जैनिज्म क्लास" का सफल आयोजन हुआ। यह विशेष क्लास डॉ. मुनि पुलकितकुमार जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। लगभग 250 जिज्ञासु प्रतिभागियों ने पंजीकरण कर इस ज्ञानवर्धक श्रृंखला से लाभ प्राप्त किया।

इस क्लास में मुनिश्री द्वारा जैन धर्म की मूल बातें, तीर्थंकर काल, श्रमण संस्कृति एवं वैदिक संस्कृति, मानव संस्कृति का क्रमिक विकास, जैन धर्म और विज्ञान, जैन जीवन शैली, हमारे महान आचार्य, तेरापंथ की पृष्ठभूमि, नौ तत्व और छह द्रव्य जैसे महत्वपूर्ण विषयों को सरल, रोचक रूप में प्रस्तुत किया गया।

इसके अतिरिक्त मोटिवेशनल सेशन्स में अरविंद मांडोत एवं सुदर्शी कटारिया ने "जैन विज़डम इन लाइफ़ एंड बिज़नेस" विषय पर प्रभावशाली विचार रखे, जिसने प्रतिभागियों को व्यवहारिक जीवन में जैन दर्शन के अनुप्रयोग की प्रेरणा दी।कार्यक्रम के शुभारंभ समारोह में परिषद् अध्यक्ष प्रसन्न धोका ने स्वागत किया। इस आयोजन के संयोजक अंकित छाजेड़ थे। कार्यक्रम की सफलता में तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम एवं अन्य सहयोगी संस्थाओं का विशेष योगदान रहा।

कार्यशाला के अंतिम चरण में परिषद् अध्यक्ष प्रसन्न धोका, मंत्री प्रदीप चौपड़ा, संयोजक अंकित छाजेड़ एवं सभा पदाधिकारियों द्वारा विशिष्ट ज्ञानार्थियों का सम्मान किया गया। इस कक्षा के माध्यम से युवाओं को धर्म से परिचित होने का विशेष अवसर मिला।

संक्षिप्त खबर

आचार्य भिक्षु की मासिक पुण्यतिथि का आयोजन

गंगाशहर। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु की मासिक पुण्यतिथि पर केंद्र द्वारा निर्णीत विषय आचार्य श्री भिक्षु की अनुशासन शैली पर अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा — स्वामीजी अनुशासनप्रिय आचार्य थे। उनका चिंतन था कि साधु हो या श्रावक, सबका जीवन अनुशासनमय होना चाहिए, अन्यथा व्यक्ति, परिवार, समाज व संगठन का स्तर नहीं बन सकता। परंतु अनुशासन किस पर, कब, कैसे करना चाहिए, इसका पूरा ध्यान रखना चाहिए। हीरे पर कितनी ही चोटें की जाएं, वह टूटता नहीं है, बल्कि उसका रूप और निखरता है। परंतु यदि काँच पर चोट करनी प्रारंभ कर दें तो वह चूर-चूर हो जाता है और किसी काम का नहीं रहता।

स्वामीजी ने भी कहीं मृदु और कहीं कठोर अनुशासन का ही प्रयोग किया था। कहीं स्वामीजी तेले का दंड भी देते तो कहीं मृदु शब्दों के द्वारा हेमराज जेसौ को जागरूक कर देते कि — हेमड़ा सोए-सोए अवगुण मेरे देखता है या अपने!

हमें भी अनुशासन करते समय पात्रता का ध्यान रखना चाहिए, ताकि किसी का अहित न हो और उसके व्यक्तित्व का सांगोपांग निर्माण हो सके। तपस्या के क्षेत्र में पवन छाजेड़ (28), तारा देवी बैद (25), प्रज्ञा सेठिया (8), हीरा देवी बाफना (8) ने तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद। प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में प्रेक्षा कल्याण वर्ष के अंतर्गत हैदराबाद की प्रेक्षावाहिनियों द्वारा साध्वी डॉक्टर गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में बीज मंत्रों के साथ प्रेक्षाध्यान कार्यशाला रखी गई। सर्वप्रथम प्रेक्षावाहिनी के सदस्यों द्वारा मंगलाचरण किया गया। साउथ जोन की कोऑर्डिनेटर रीता सुराणा द्वारा स्वागत भाषण के बाद डॉक्टर साध्वी गवेषणाश्री जी ने अपने वक्तव्य में धर्मप्रेमी भाई-बहनों को बताया कि प्रज्ञा के महासुमेरू आचार्य महाप्रज्ञ जी ने हमें बीज मंत्रों के रूप में अमूल्य निधि दी है, जिन्हें हम प्रेक्षाध्यान के साथ प्रयोग करें तो हर प्रकार की व्याधियों को दूर हटा सकते हैं।

ध्यान का प्रयोग आत्म-जागृति, आत्म-संयम और सकारात्मक सोच का सशक्त साधन है। हमें अपने दैनिक जीवन में सुबह उठते ही दीर्घ श्वास के साथ बीज मंत्र का भी जप करना चाहिए। साध्वीवृंद ने सामूहिक रूप से पूरी धर्मसभा को अरिष्ट निवारक बीज मंत्रों की मंत्र प्रेक्षा 40 बार करवाई। साध्वी मयंकप्रभा जी ने भी पूरे श्रावक समाज को प्रेक्षाध्यान अपनाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर हैदराबाद की प्रेक्षावाहिनियों के संवाहक और कई सदस्य उपस्थित थे। लगभग 200 लोगों ने इस कार्यशाला का लाभ लिया।

तप समाचार

गुवाहाटी। मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि रमेश कुमार जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में पूर्वी नाहटा (धर्मपत्नी : पीयूष नाहटा) ने अठाई की ।

लूणकरणसर। साध्वी ललितकला जी के सान्निध्य में जयंत, भव्य, विशाल एवं मोनिका छाजेड़ ने अठाई तप किया तथा सरिता तातेड़ एवं संतोष भूरा ने 9 का तप किया।

धूरी, पंजाब। साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में विनय जैन ने नौ की तपस्या की।

मैसूर। साध्वी सिद्धप्रभा जी के सान्निध्य में कृष्णा दक सुपुत्र महावीर दक ने 9 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

विजयनगर ,बैंगलोर। साध्वी संयमलता जी ने अशोक बैद को 9, विकास पगारिया एवं आयुषी दस्सानी को 8 के तप का प्रत्याख्यान करवाया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

गृह प्रवेश

डोम्बिवली, मुंबई। छापली निवासी राजेश प्रकाश चोरडिया परिवार का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक दिनेश चोरडिया (ठाणे), सहयोगी संस्कारक डोंबिवली के राजेश चौधरी, संजय खाब्या, प्रवीण धींग एवं विपिन मेहता द्वारा विधि विधान पूर्वक सम्पादित किया गया।

जैन विद्या परीक्षा के पारितोषिक वितरण

आमेट।

तेरापंथ भवन में साध्वी सम्यकप्रभा जी के सान्निध्य में समण संस्कृति संकाय द्वारा आयोजित जैन विद्या परीक्षा के प्रमाणपत्र व पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

साध्वी सम्यकप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जैन विद्या की परीक्षाएं जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के सिद्धांतों एवं जैन दर्शन को जानने, समझने एवं ज्ञान के विकास का सशक्त माध्यम हैं। भावी पीढ़ी को इन परीक्षाओं से जुड़ना चाहिए। जैन विद्या परीक्षा से नॉलेज पावर बढ़ता है। जैन विद्या मेवाड़ आंचलिक संयोजक मनोहरलाल दुग्गड़, आमेट केंद्र व्यवस्थापक देवेंद्र पितलिया, सह केंद्र व्यवस्थापक विपुल पितलिया के अथक प्रयास से, केंद्र द्वारा निर्देशित जैन विद्या परीक्षा विगत 4 वर्षों से ऑनलाइन माध्यम से आयोजित हो रही है। गत वर्ष 2024 की परीक्षा में आमेट से कुल 112 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें से 84 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। प्रायोजक महेंद्रकुमार संजयकुमार बोहरा द्वारा पारितोषिक दिए गए।

जैन विद्या परीक्षा 2024 में आमेट सभा व केंद्र व्यवस्थापक के सक्रिय सहयोग से राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया गया। गत वर्ष भाग 9 में उत्तीर्ण विद्वान धारकों में उमा हिरण, वैशाली हिरण, मंजू हिरण, खुशबू पामेचा, अनीता दुग्गड़ रही। वहीं भाग 1 व 2 में राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय स्थान पर सुदीप छाजेड़ व ऋषभ डांगी रहे। सम्यक दर्शन कार्यशाला 2024 में देश-विदेश स्तर के परीक्षार्थियों में टॉप 100 में प्राची कोठारी का 91वां स्थान व खुशबू पामेचा का 88वां स्थान रहा, जिनका गुरुदेव के समक्ष मोमेंटो प्रदान कर सम्मान किया गया। प्रमाणपत्र तेरापंथ सभा अध्यक्ष यशवंतकुमार चोरडिया एवं विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने वितरित किए। सरदारगढ़ से पधारी उपासिका शांताबाई ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन एवं कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र पितलिया ने किया। स्थानीय सभा द्वारा प्रायोजक एवं जैन विद्या व्यवस्थापक का सम्मान किया गया।

संगायकों की छवि में संगीत प्रतियोगिता का आयोजन

केजीएफ।

स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष एवं तेरस के अवसर पर “आज की शाम भिक्षु के नाम” शीर्षक से एक संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इस प्रतियोगिता में ज्ञानशाला के बच्चों ने तेरापंथ धर्मसंघ के संगायकों द्वारा गाए गए गीतों की सुंदर प्रस्तुतियाँ दीं। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी पावनप्रभा जी के गीत संगान से हुआ। तेरापंथ सभा एवं युवक परिषद ने मंगलाचरण गीत “प्रभु तुम्हारे पावन पथ पर” गाकर वातावरण को मंगलमय बनाया।

प्रतियोगिता में बच्चों ने आचार्य भिक्षु पर आधारित गीतों की अत्यंत मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं। अपने-अपने प्रिय गायकों के गीतों को बच्चों ने उन्हीं के अंदाज में प्रस्तुत किया। कोई बच्चा कमल सेठिया की छवि में, तो कोई ऋषि दुगड़, राकेश मांडोत, अनूप जलोटा, अभिलाषा बांठिया, मीनाक्षी भूतोड़िया, पिपाडा सिस्टर्स आदि संगायकों का प्रतिबिंब बनकर मंच पर उतरा। बिना देखे उन गीतों की हूबहू प्रस्तुति देखकर पूरी सभा आश्चर्यचकित रह गई।

परिणाम इस प्रकार रहे– 10 वर्ष से ऊपर आयु वर्ग में प्रथम स्थान युक्ता-धानी हिंगड़, द्वितीय स्थान क्रियांश मुथा एवं तृतीय स्थान क्रिशा हिंगड़ ने प्राप्त किया। 10 वर्ष से कम आयु वर्ग में – प्रथम स्थान भ्रिति हिंगड़, द्वितीय स्थान युधिर बांठिया, तृतीय स्थान जैनिक सेठिया ने प्राप्त किया। लगभग 15 ज्ञानशाला के बच्चों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। निर्णायक मंडल में पंकज बांठिया, सुमन बांठिया और प्रिया बांठिया सम्मिलित रहे। उन्होंने कलाकारों के व्यक्तित्व, भाव-भंगिमा और प्रस्तुति को आधार बनाकर चयन किया।

साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा कि मंच पर खड़े होकर आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुति देना बड़ी उपलब्धि है। सभी प्रतिभागियों को गौतम सेठिया की ओर से पुरस्कार प्रदान किए गए।

कार्यक्रम का आकर्षक संचालन ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका कांता बांठिया ने किया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं एवं ज्ञानार्थियों की सराहनीय उपस्थिति रही।

शपथ ग्रहण समारोह

महरौली, दिल्ली। तेरापंथ महिला मंडल, साउथ दिल्ली का शपथ ग्रहण समारोह (सत्र 2025-27) अध्यात्म साधना केंद्र, महरौली में डॉ. साध्वी कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम का मंगल शुभारंभ प्रेरणा गीत के सामूहिक संगान से हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष शिल्पा बैद ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया और नव-नियुक्त अध्यक्ष सरोज भूतोड़िया को शपथ दिलाई। सरोज ने अपनी टीम की घोषणा कर उन्हें शपथ दिलाई। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने ₹सबका साथ, सबका विकास₹ के विजन के साथ कार्य करने की बात कही। फाउंडर अध्यक्ष शिल्पा बैद ने सरोज के साथ रजनी बाफना को भी नवगठित मंडल के मार्गदर्शन हेतु तेरापंथ महिला मंडल, साउथ दिल्ली की संस्थापिका के रूप में विभूषित किया और दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मानित किया। तत्पश्चात कार्यसमिति की सभी बहनों को बैच पहनाए गए और पूरी टीम को दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। विशेष आमंत्रण पर पधारीं बाला गर्ग (अध्यक्ष, Inner Wheel Club शाहदरा), स्नेह कानोड़िया (पूर्व अध्यक्ष, Lions Club Capital) और सुमन महेश्वरी ने सरोज भूतोड़िया का सम्मान करते हुए मंडल के प्रति शुभकामनाएं प्रेषित कीं। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, दिल्ली महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष मंजू जैन, साउथ दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुशील पटावरी, जोधराज बैद, राहुल भूतोड़िया और हेमराज पींचा ने भी अपनी शुभकामनाएं दीं। अनेकों उदारमना व्यक्तियों ने विसर्जन की चेतना को पुष्ट करते हुए मंडल को आर्थिक सहयोग प्रदान किया। डॉ. साध्वी कुंदनरेखा जी ने साउथ दिल्ली महिला मंडल को एक ओजस्वी महिला मंडल बताते हुए उन्हें ₹तीन C – Come, Connect और Correct₹ के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी। आभार ज्ञापन मंडल की मंत्री संगीता दुगड़ ने किया और सभी को तत्त्वज्ञान व तेरापंथ दर्शन पाठ्यक्रम से जुड़ने का आग्रह किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन रजनी बाफना ने किया।

चेंबूर। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल, चेंबूर का शपथ विधि समारोह गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत 'नमस्कार महामंत्र' से हुई, तत्पश्चात मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। अध्यक्षा ममता कच्छारा ने सभी का हार्दिक स्वागत किया। इसके पश्चात प्रेरणा गीत का मधुर संगान हुआ। कोर टीम का अभिनंदन भावना बड़ाला एवं पूजा सिंयाल ने अभिनव अंदाज़ से किया। कार्यकारिणी की घोषणा टीम की औपचारिक घोषणा जूली परमार एवं पायल मांडोत द्वारा की गई। पूर्व अध्यक्षा मनीषा कोठारी ने कोर टीम सहित कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई। कार्यकारिणी का पूरा विवरण PPT के माध्यम से रीना धाकड़ एवं मित्तल बापना ने साझा किया, जिसमें विशाखा बाफना और वीणा कोठारी का भी सहयोग रहा। मंडल की आधारशिला रखने वाली सुगन देवी कोठारी की उपस्थिति प्रेरणादायक रही।

नई पहल— 'माँ की पाठशाला' नामक एक नवीन सामाजिक पहल की घोषणा नव-निर्वाचित अध्यक्षा ममता कच्छारा ने की। इस आयोजन में 101 बहनों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

हासन। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद हासन द्वारा तेरापंथ भवन, गाँधी नगर, बेंगलुरु में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी ठाणा-02 के सान्निध्य में कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ युवक परिषद, गाँधीनगर (बेंगलुरु) के अध्यक्ष प्रसन्न धोका ने कुशलता पूर्वक किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ, उसके पश्चात विजय-गीत और श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। संस्कारक अमित भंडारी ने जैन विधि के अनुसार शपथ ग्रहण सम्पन्न करवाया। पूर्व अध्यक्ष गौरव गुलगुलिया ने नव-निर्वाचित अध्यक्ष नितेश सुराणा को शपथ दिलाई। तत्पश्चात नितेश ने अपनी नवनिर्मित कार्यकारिणी टीम को शपथ ग्रहण करवाई।

मुनिश्री ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि हासन युवक परिषद पहले से ही सक्रिय है, और इस नई टीम के गठन से परिषद नई ऊँचाइयों को स्पर्श करे और अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशानुसार सभी कार्य सफलता पूर्वक करे। अंत में प्रसन्न धोका ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम का समापन किया

संघ का प्राण तत्व है अनुशासन

नाथद्वारा।

श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में साध्वी रचनाश्रीजी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी गीतार्थ प्रभा जी, साध्वी प्राज्ञ प्रभा जी एवं साध्वी नमन प्रभा जी द्वारा "भिक्षु को समझो और समझाओ" गीत की भावपूर्ण प्रस्तुति से हुआ। इसके उपरांत साध्वी गीतार्थ प्रभा जी ने अपने विचार रखे।

साध्वी रचनाश्री जी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि व्यक्ति के जीवन विकास की दृष्टि से अनुशासन का होना अत्यंत आवश्यक है। अनुशासन को बोझ नहीं, उपहार मानना चाहिए। जैसे रुग्ण व्यक्ति के लिए दवा-पानी आवश्यक है, जीने के लिए सम्यक श्वास आवश्यक है, अंधकार मिटाने के लिए दीपक आवश्यक है, उसी प्रकार आत्मानुशासन के जागृत होने से पूर्व गुरु का अनुशासन आवश्यक है। उन्होंने कहा कि एक समय था जब घर का प्रत्येक सदस्य मुखिया के संरक्षण और अनुशासन में अपना विकास करता था, किंतु वर्तमान समय में बड़े-बुजुर्गों के अनुशासन को विकास में बाधक समझा जाने लगा है। आपने आगे कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के प्रत्येक सदस्य को आचार्य भिक्षु ने अनुशासन, व्यवस्था, मर्यादा और एकता की जन्मघूंटी प्रदान की।

कुछ पाना है, कुछ बनना है तो अनुशासन की दुर्गम घाटियों से होकर गुजरना होगा। आचार्य भिक्षु ने अनुशासन को संघ का प्राण तत्व बताया। अनुशासन से व्यक्तित्व निखरता है। आचार्य भिक्षु ने अपने प्रिय शिष्य भारमल, हेमराज, खेतसी और वेणीराम पर अनुशासन का प्रयोग कर पूरे संघ को अनुशासन का प्रशिक्षण दिया।

तेरापंथ की मर्यादा और व्यवस्था पर उद्बोधन देते हुए साध्वी श्री ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ प्राणवान है, क्योंकि यहाँ अनुशास्ता से लेकर प्रत्येक सदस्य मर्यादा और व्यवस्था का अनुपालन करता है। संघ का गौरव निरंतर बढ़ रहा है, जिसका मूल कारण है शिष्यों का समर्पण और गुरु का वात्सल्य। आचार्य भिक्षु ने आगमसम्मत साधना को ही अपने जीवन का आचार बनाया। उन्हें संख्या का मोह नहीं था और साध्वाचार में शैथिल्य उन्हें कभी स्वीकार्य नहीं था। मर्यादा वाचन करते हुए आपने अनेक उदाहरणों के माध्यम से तेरापंथ की प्राणवत्ता के महत्व को उजागर किया।

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर साध्वीश्री ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि त्योहार एक माध्यम है आपसी भाईचारे को बढ़ाने और मिलने-जुलने का। रक्षाबंधन का पवित्र त्योहार न तो पटाखों के प्रदूषण से जुड़ा है, न ही होली की तरह उच्छृंखलता से। यह मात्र एक कच्चे धागे में कर्तव्यनिष्ठा जगाने का प्रतीक है।

रक्षाबंधन के अवसर पर साध्वी श्री द्वारा "आध्यात्मिक राखी" एग्ज़ीबिशन लगाई गई।

जीवन में मधुर संबंध बनाए रखना महत्वपूर्ण

लूणकरणसर।

साध्वी ललितकला जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में विशाल दम्पति शिविर का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ साध्वी योगप्रभा जी एवं साध्वी मंजुलाश्री जी के मंगल स्वर से हुआ।

साध्वी ललितकला जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पति एवं पत्नी एक सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों के शत-प्रतिशत सहयोग से ही गृहस्थी की गाड़ी सुचारु रूप से चलती है। आज के भागदौड़ भरे जीवन में एक-दूसरे को समय देना आवश्यक है। जीवन में मधुर संबंध बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

साध्वी मंजुलाश्री जी ने कहा कि पति-पत्नी परिवार के दो महत्वपूर्ण सदस्य हैं, जिन्हें आपसी सहयोग एवं सामंजस्य बनाए रखना चाहिए। साध्वी समृद्धिप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि विवाह दो दिलों एवं दो मस्तिष्कों का मिलन है। दोनों को एक-दूसरे की भावनाओं को समझते हुए अपने-अपने दायित्वों का सजगता से निर्वाह करना चाहिए।

शिविर में लगभग 61 दम्पति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी योगप्रभा जी ने किया। सभा अध्यक्ष मालचंद नौलखा, महिला मंडल अध्यक्ष सरिता चोपड़ा, सभा मंत्री धनपत तातेड़, विजयश्री दुगड़, तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष विकास तातेड़ एवं गौतम बाफना ने शिविर में सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

संस्कारों की वृद्धि का श्रेष्ठ माध्यम है ज्ञानशाला

केजीएफ।

स्थानीय तेरापंथ भवन में साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस बड़े उत्साह से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण ₹चैत्य पुरुष जग जायेर की भावपूर्ण प्रस्तुति द्वारा सभा सदस्य संतोष बांठिया और जसवंतराज बांठिया ने की।

साध्वी पावनप्रभाजी ने ज्ञानशाला के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि ज्ञानशाला बच्चों में ज्ञान और संस्कारों की वृद्धि का श्रेष्ठ माध्यम है। साध्वी रम्यप्रभाजी ने ज्ञानवर्द्धक खेलों का आयोजन किया और आचार्यों के नाम पर प्रतियोगिता करवाई, जिसमें धानी हिंगड और गौरव बांठिया विजेता बने।

ज्ञानशाला के बच्चों ने कव्वाली के माध्यम से धार्मिक उपकरणों को एक-दूसरे को समझाया और छोटे-छोटे बच्चों ने ज्ञानशाला गीत की सुंदर प्रस्तुति दी। आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में बच्चों ने उनके जीवन के दृष्टांतों पर आधारित आकर्षक एवं मनमोहक प्रस्तुतियां दीं।

कार्यक्रम के प्रायोजक प्रवीण कुमार सेठिया एवं कांताबाई सेठिया रहे, जिन्होंने सभी ज्ञानार्थियों को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन एवं आभार ज्ञापन प्रशिक्षक कमलेश हिंगड ने किया।

जीवन रूपी महल का एक मजबूत स्तंभ है सद्संस्कार

विजयनगर, बैंगलोर।

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा विजयनगर के तत्वावधान में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया। प्रकाश महेंद्र टेबा के निवास स्थान से अनुशासन रैली जयघोषों की अनुगूंज के साथ प्रस्थान कर सभा भवन पहुँची।

साध्वी संयमलता जी ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा— ₹जीवन रूपी महल का एक मजबूत स्तंभ सद्संस्कार है। यदि यह स्तंभ कमजोर हो जाए तो महल भी नष्ट हो जाता है। जैसे तारों के बिना विद्युत संचार नहीं होता, रेखाओं के बिना चित्र का निर्माण नहीं होता, उसी प्रकार स्वस्थ व्यक्ति एवं स्वस्थ समाज का निर्माण भी संस्कारों से ही संभव है।₹

उन्होंने कहा कि बच्चों को एक अंकुर की भाँति सद्संस्कारों से सिंचित करने का कार्य हमारी प्रशिक्षिकाएँ और माता-पिता करते हैं, अतः सभी को जागरूक होकर बच्चों को नियमित रूप से ज्ञानशाला भेजना चाहिए।

साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति अध्यात्म और संस्कार प्रधान संस्कृति है। संयुक्त परिवारों में पले-बढ़े बच्चे संस्कारी, विनम्र और सहिष्णु बनते हैं। उन्होंने माता-पिता से आह्वान किया कि बच्चों की टीवी और मोबाइल की गतिविधियों पर ध्यान दें, ताकि भावी पीढ़ी योग्य और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सके।

साध्वी मनीषाप्रभा जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा— ₹ज्ञानशाला भविष्य की उज्ज्वल तस्वीर बनाने वाली और गुड मैन बनाने वाली पाठशाला है।₹ उन्होंने बेस्ट (BEST) शब्द का विश्लेषण कर बच्चों को प्रेरणादायी संदेश दिया। आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में ज्ञानशाला के बच्चों ने ₹अंधविश्वास पर विश्वास न करें₹ विषय पर आधारित रोचक प्रस्तुति दी। वहीं डिविनिटी एवं विजयनगर ज्ञानशाला के बच्चों ने ₹चातुर्मास में करणीय कार्य₹ और ₹ज्ञानशाला में क्या मिलेगा₹ विषय पर आकर्षक प्रस्तुतियाँ दीं।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं का समायोजन

चेन्नई।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में चेन्नई अणुव्रत समिति की आयोजना में अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2025 की जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन साध्वी उदितयशा के सान्निध्य में साहुकारपेट तेरापंथ सभा भवन में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। निर्णायक रेखा डी. मरलेचा ने मंगलाचरण गीत प्रस्तुत किया। अणुव्रत समिति अध्यक्षा एवं एसीसी राष्ट्रीय सह-संयोजिका सुभद्रा लुणावत ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया।

मंत्री एवं एसीसी तमिलनाडु राज्य प्रभारी कुशल बाँठिया ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2025 के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि विद्यालय स्तर पर प्रथम आए विद्यार्थियों के बीच यह प्रतियोगिता समायोजित है। साध्वी उदितयशा जी ने बच्चों को प्रेरणा देते हुए कहा कि बच्चों को सही दिशा की ओर आगे बढ़ना है।

आचार्य तुलसी का अवदान – अणुव्रत जिसकी गूंज हर घर में होनी चाहिए। अणुव्रत यानी छोटे-छोटे नियमों को अपने जीवन में आत्मसात कर अच्छे बालक बनकर देश के सुनिर्माण में योगभूत बनना चाहिए।

इस जिला स्तरीय 'संविधान की धार, मर्यादाओं का हो आधार' मुख्य विषय पर आधारित प्रतियोगिताओं में 44 स्कूलों से लगभग 350 बच्चों ने गायन एकल, गायन समूह, भाषण, कविता, चित्रकला, निबंध प्रतियोगिता में कक्षा 6–8 और 9–12 के ग्रुपों में भाग लिया।

डॉ. संतोष नाहर, भावना जैन, डॉ. कमलेश नाहर, गौतमचन्द सेठिया, मुकेश नवलखा, डॉ. दिनेश धोका, रेखा मरलेचा, रूद्र मयान एवं डिम्पल जैन ने निर्णायकों की भूमिका निभाई। निर्णायकों ने निर्णय सुनाते हुए अपने-अपने विचार व्यक्त किए। छात्रों के साथ लगभग 60 अध्यापकों की भी उपस्थिति रही।

प्रायोजक विजयराज–पुष्पाबाई, भरत–मुस्कान कटारिया परिवार, निर्णायकों एवं गणमान्य व्यक्तित्वों का समिति की ओर से सम्मान किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति पूर्वाध्यक्ष सम्पतराज चोरड़िया, तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक खतंग, साहुकारपेट ट्रस्ट बोर्ड प्रबंधन न्यासी विमल चिप्पड, अणुव्रत समिति पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं की गरिमामय उपस्थिति रही। चेन्नई एसीसी संयोजिका निर्मला छल्लाणी, गुणवंती खाटेड, मनोज डुंगरवाल के साथ पदाधिकारी एवं अनेक कार्यकर्ताओं के समय और श्रम से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। द्वितीय सत्र का संचालन गुणवंती खाटेड एवं धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष स्वरूप चन्द दाँती ने किया।

ज्ञानशाला में होता है मूल्यों और सद्गुणों का बीजारोपण

भिवानी।

तेरापंथ भवन भिवानी में 'शासनश्री' साध्वी तिलकश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नवकार मंत्र के उच्चारण से हुआ। तत्पश्चात भिक्षु अष्टकम का संगान किया गया, जिसमें सुनीता नाहटा ने मधुर प्रस्तुति दी। इसके पश्चात ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने सामूहिक रूप से "अर्हम-अर्हम की वंदना" गीत का संगान कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

साध्वी तिलकश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज के समय में बच्चों के लिए पढ़ाई के साथ-साथ संस्कारों का होना भी अनिवार्य है। ज्ञानशाला वह स्थान है जहां बच्चों में नैतिक मूल्यों और सद्गुणों का बीजारोपण होता है। उन्होंने प्रशिक्षिकाओं के परिश्रम की सराहना करते हुए अभिभावकों से भी बच्चों के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया। साध्वी महिमाश्री जी ने भी ज्ञानशाला को जीवन निर्माण की प्रयोगशाला बताते हुए कहा कि प्रत्येक अभिभावक का दायित्व है कि वे अपने बच्चों को संस्कारित बनाने के लिए नियमित रूप से ज्ञानशाला भेजें।

सभा अध्यक्ष सन्मति जैन सहित वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं ने भी बच्चों का उत्साहवर्धन किया। ज्ञानशाला प्रभारी विजय जैन, सह-संयोजिका विनीता जैन, उपासक रमेश जैन, उपासिका मधु जैन व अन्य गणमान्यजनों ने अपने विचार रखे।

ज्ञानार्थियों ने विविध प्रस्तुतियों से कार्यक्रम को जीवंत बनाया – धार्मिक गीत पर नृत्य, "सपनों को सच करती संस्कार शाला – ज्ञानशाला" विषय पर नाटिका और छोटे-छोटे बच्चों द्वारा लोग्गस पाठ, 25 बोल, नमस्कार महामंत्र व वंदन पाठ का मधुर वाचन विशेष आकर्षण रहा।

प्रशिक्षिकाओं द्वारा प्रस्तुत गीतिका ने भी समां बांधा। मंच संचालन मुख्य प्रशिक्षिका रेनू नाहटा एवं शिखा जैन ने संयोजित ढंग से किया।

ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव मनाया गया

बीकानेर।

तुलसी साधना केंद्र 'शासनश्री' साध्वी मंजूप्रभा जी एवं साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव बड़े उत्साह और विविधताओं के साथ मनाया गया।

साध्वी मंजूप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि बालक भगवान के रूप होते हैं और सहज-सरल स्वभाव के धनी होते हैं। ज्ञानशाला का उद्देश्य बच्चों को संस्कारी, ज्ञानवान और उत्तम इंसान बनाना है। यह बच्चों के बाह्य व्यक्तित्व को निखारती है और आत्मविश्वास को बढ़ाती है। साध्वी कुंथुश्री जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी का महनीय उपक्रम है – ज्ञानशाला। यह संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला है। जीवन की तीन अवस्थाएं – बचपन, यौवन और बुढ़ापा – प्रत्येक मनुष्य को प्रभावित करती हैं। बचपन में ज्ञानार्जन, यौवन में धनार्जन और बुढ़ापे में धर्मार्जन किया जाता है। यदि बचपन सद्संस्कारों से अभिमंत्रित हो तो युवावस्था और बुढ़ापा भी श्रेष्ठ बन जाता है। बालक की प्रथम शिक्षिका मां होती है, तत्पश्चात ज्ञानशाला संस्कार निर्माण का सशक्त माध्यम बनती है। वार्षिकोत्सव के अवसर पर ज्ञानार्थियों ने ज्ञानशाला में चल रही विविध गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की। आचार्य भिक्षु के त्रिशताब्दी वर्ष के अंतर्गत स्वामीजी के जीवन को अनेक दृश्यों के माध्यम से दर्शाया गया। आचार्य भिक्षु के प्रमुख श्रावक गेरूलाल व्यास, टीकम डोसी, भिक्षुभक्त शोभ और विजयचंद पटवा की भूमिका निभाकर उनके परिचय का भावपूर्ण चित्रण किया गया। साथ ही, आमेट की श्राविका चंदूबाई का परिचय भी प्रस्तुत किया गया।

सभा अध्यक्ष सुरपत बोथरा ने अपने विचार व्यक्त किए और सभी बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें सम्मानित किया। एक नन्हे बालक, आर्यन बैंगानी, जिसने तेले की तपस्या की, उसका भी विशेष रूप से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन ज्ञानशाला संयोजिका शांताबाई भूरा एवं नीतू रामपुरिया ने किया।

अणुव्रत व्याख्यान माला का हुआ शुभारंभ

पीलीबंगा।

अणुव्रत व्याख्यान माला का जैन भवन, पीलीबंगा में भव्य शुभारंभ किया गया। यह आयोजन डॉ. मुनि विनोदकुमार जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण के साथ हुई, जिसमें अणुव्रत गीत का भावपूर्ण संगान राजकुमार छाजेड़ ने किया। इस अवसर पर मुनि विनोदकुमार जी ने अपने उद्बोधन में अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए अणुव्रत की उत्पत्ति, उद्देश्य और इसकी वर्तमान समाज में आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि आज के युग में जब नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है, अणुव्रत रूपी आचरण-संहिता मानव समाज के लिए एक उज्ज्वल मार्गदर्शक बन सकती है। अपने प्रवचन में मुनिश्री ने अणुव्रत के चारित्रिक व्यवहार पक्ष को कथात्मक शैली में सुंदर उदाहरणों सहित प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि अणुव्रत केवल व्यक्तिगत आत्मबल को नहीं, बल्कि सामाजिक सद्भाव और शांति को भी सुदृढ़ करता है।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
08 सितम्बर - 14 सितम्बर, 2025

संस्कारों के निर्माण के लिए ज्ञानशाला का उपक्रम सराहनीय

बायतु।

आचार्य महाप्रज्ञ मार्ग स्थित स्थानीय तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला प्रशिक्षिका अनिता जैन सहित प्रशिक्षिकाओं द्वारा ज्ञानशाला की गतिविधियों पर आधारित सुंदर गीतिका के माध्यम से मंगलाचरण से हुई।

साध्वी जिनरेखा जी ने अपने प्रवचन में कहा कि बच्चों के संस्कार उनके व्यवहार से प्रकट होते हैं, इसलिए संस्कार निर्माण के लिए ज्ञानशाला अत्यंत महत्वपूर्ण उपक्रम है। यहां बच्चों में सद्‌संस्कारों का संचार होता है। उन्होंने कहा कि जैसा परिवेश मिलेगा, वैसे ही संस्कार विकसित होंगे। बच्चे परिवार, समाज और राष्ट्र का भविष्य होते हैं।

इन्हीं बच्चों द्वारा राष्ट्र की संस्कृति, समाज की सभ्यता और परिवार के मौलिक गुणों का संरक्षण होगा। साध्वी मधुरयशा जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी द्वारा स्थापित ज्ञानशाला का अवदान आज राष्ट्र निर्माण की नींव का कार्य कर रहा है। समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करने और प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिए बच्चों की नींव मजबूत होना आवश्यक है।

साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक प्रेरणादायी गीतिका की प्रस्तुति दी गई। ज्ञानशाला के बच्चों ने जैन धर्म पर आधारित व्यवहारपरक सुंदर नाटिका प्रस्तुत की। तेरापंथ सभा द्वारा ज्ञानार्थियों को पारितोषिक प्रदान किए गए।

महिला मंडल अध्यक्ष एवं प्रशिक्षिका अनिता जैन ने ज्ञानशाला की जानकारी दी। तेरापंथ युवक परिषद के मनोज चौपड़ा ने बताया कि 'चक्र घुमाओ, भाग्य आजमाओ' पर आधारित एक रोचक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विजेताओं को सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मनोज चौपड़ा ने किया।

ज्ञानशाला में होता है संस्कारों का बीजारोपण

आमेट।

तेरापंथ सभा भवन में साध्वी सम्यकप्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी श्री द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण से हुआ। साध्वी सम्यक प्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि समय के साथ सभी बदल रहे हैं, ऐसे में नन्हें बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण करना हो तो उन्हें ज्ञानशाला भेजना चाहिए। साध्वी मलयप्रभा जी ने कहा कि पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी की देन है ज्ञानशाला, जहां बच्चों को जैनत्व के बारे में जानकारी दी जाती है।

ज्ञानशाला प्रभारी मनीषा छाजेड़ के मार्गदर्शन में बच्चों ने 'भीखण से भिक्षु यात्रा' का सुंदर परिसंवाद प्रस्तुत किया। प्राची कोठारी ने बच्चों से 'सुन लो परमात्मा मेरी प्रार्थना' एक्शन शो की प्रस्तुति करवाई। ज्ञानशाला संयोजिका आशा डूंगरवाल ने ज्ञानशाला की गतिविधियों की प्रस्तुति दी। सभा मंत्री मनोहर लाल पितलिया ने अपने विचार रखे। पारितोषिक के प्रायोजक शांतिलाल गजरा देवी बापना द्वारा बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए। आभार ज्ञापन कोमल भंडारी ने किया और संचालन सज्जन मेहता ने किया।

- आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
- सत्य के मार्ग पर चलने में परेशानी आ सकती है, किंतु सच्चाई के मार्ग पर चलने से मिलने वाली मंजिल सुखद होती है।

— आचार्य श्री महाश्रमण

आगे बढ़ने के लिए अति आवश्यक होता है अनुशासन

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानार्थियों द्वारा अर्हम वंदना से हुआ। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि ज्ञानशाला में बच्चों को अनुशासन का पाठ सिखाया जाता है। अनुशासन से बच्चों में पात्रता का विकास होता है, और जब पात्रता श्रेष्ठ होगी तो ज्ञान सहजता से ग्रहण किया जा सकेगा। जीवन में आगे बढ़ने के लिए अनुशासन अति आवश्यक है। ज्ञानशाला का उद्देश्य बच्चों को संस्कारित एवं जिम्मेदार नागरिक बनाना है।

मुनि श्री ने आगे कहा कि ज्ञानशाला में प्रशिक्षिकाएँ बच्चों को जैन जीवन शैली, तत्त्वज्ञान और तेरापंथ दर्शन का प्राथमिक ज्ञान देकर उन्हें धार्मिक जीवन जीने की ओर उन्मुख करती हैं। बच्चों ने गीतों की रोचक प्रस्तुतियाँ दीं और यह संदेश दिया कि हमें सातों दुर्व्यसनों से बचना चाहिए तथा नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। प्रशिक्षिकाओं ने "आओ हम ज्ञानशाला में पढ़ाएँ" गीत प्रस्तुत किया।

सभा के मंत्री जतनलाल संचेती ने अपने वक्तव्य में कहा कि बच्चों के भविष्य निर्माण के लिए ज्ञानशाला अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि परिवार के प्रत्येक बच्चे को ज्ञानशाला भेजा जाए। जयश्री भूरा ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर ज्ञानशाला से संबंधित एक फिल्म डॉक्युमेंट्री भी प्रदर्शित की गई, जिसमें तीर्थंकर मल्लिनाथ भगवान का पूर्व भव दर्शाया गया।

कार्यक्रम में रुचि छाजेड़ का अभिनंदन किया गया, जिन्हें पूरे भारत में श्रेष्ठ ज्ञानशाला प्रशिक्षिका का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। महिला मंडल की अध्यक्ष प्रेम बोथरा एवं पूर्व अध्यक्ष संजुदेवी लालाणी ने उनका सम्मान किया। तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकर्ताओं ने सम्पूर्ण व्यवस्थाएँ सजगता से संपादित कीं। कार्यक्रम का संचालन सरिता आंचलिया ने किया।

इस अवसर पर तारादेवी बैद ने 28 दिन की, मुनि नमि कुमार जी ने 19 दिन की, सुरेंद्र भूरा ने 10 दिन की तथा अभय कुमार चोपड़ा ने 7 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

अनुशासन समाज को जीने की राह दिखाती है

हुबली।

मुनि विनीत कुमार जी ने तेरापंथ भवन में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य श्री भिक्षु की अनुशासन शैली श्रावक समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने समझाया कि अपने को जीतने से ही सबको जीता जा सकता है। अपने को जीतने का अर्थ है मन और उसकी चंचल वृत्तियों पर नियंत्रण। मन को वश में करना घोड़े को वश में करने से भी कठिन कार्य है, और इसके लिए संयम व तप की साधना आवश्यक है। आचार्य श्री भिक्षु ने अपने जीवन में अनुशासन के अनेक प्रयोग किए और संयम, तपस्या, गुरु-शिष्य परंपरा, संघ बद्ध जीवन और आत्म-विकास पर विशेष बल दिया। उनकी शिक्षाओं ने श्रावकों को संतुलित, अर्थपूर्ण और अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा दी।

मुनि पुनीत कुमार जी ने अनुशासन के लाभ बताते हुए कहा कि यह जीवन में नियमितता, आत्म-नियंत्रण, उत्पादकता और लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में सहायक है। उन्होंने अनुशासन के लिए नियमित दिनचर्या, लक्ष्य निर्धारण, आत्म-नियंत्रण और सतत अभ्यास को आवश्यक बताया। अनुशासन से आत्मविश्वास बढ़ता है, सफलता मिलती है और जीवन में संतोष की प्राप्ति होती है। आचार्य श्री भिक्षु का जीवन इस सत्य का उदाहरण है कि अनुशासन व्यक्ति को सुंदर और सफल जीवन की ओर अग्रसर करता है। श्रावण त्रयोदशी के अवसर पर तेरापंथ भवन में सामूहिक आयंबिल का आयोजन हुआ जिसमें 80 तपस्वियों ने आयंबिल का तप साधा।

'तब से अब' कार्यक्रम समायोजित

घाटकोपर।

'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में तथा 'शासनश्री' साध्वी मंजुरेखा जी के निर्देशन में भिक्षु चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में "तब से अब" कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

'शासनश्री' साध्वी मंजुरेखा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु का जीवन वैराग्य का खजाना था। उन्होंने हर परिस्थिति को समता से सहन किया और कठिन कसौटियों के बीच भी संयम को सुरक्षित रखा। उस समय इतने विशाल साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविकाएं कहां थे, जबकि आज बदलते परिवेश में चारों ओर विकास ही विकास दिखाई देता है।

साध्वी उदितप्रभा जी ने कहा कि स्वामीजी का संयमबल ही तेरापंथ धर्मसंघ का हृदय है। साध्वी निर्भयप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मोक्षधर्म के विशुद्ध स्वरूप को ही तेरापंथ कहा जाता है।

साध्वी चेलनाश्री जी ने कहा कि स्वामीजी की तीक्ष्ण बुद्धिबल ही वर्तमान युग की महान उपलब्धि है।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, युवक परिषद और महिला मंडल घाटकोपर की सक्रिय सहभागिता रही।

संबोधि

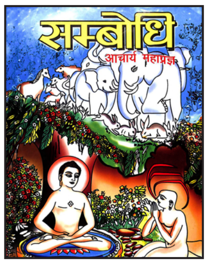

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

मानव ओरा का मूल द्रव्य प्राण है। प्राण जीवन का आधार है। भावना का संबंध प्राण से है। प्राण का रंग भाव-विचारों के बदलते ही बदल जाता है। वही बाहर प्रकट होता है। प्राण ओरा के पार्टिकल्स सबके भिन्न भिन्न होते हैं। आदमी के चले जाने के बाद भी जो परमाणु शेष रहते हैं उनसे आदमी के संबंध में जाना जा सकता है। प्राण ओरा में बहुत अधिक प्रकाशशील स्फुलिंग होते हैं। व्यक्ति से प्रभावित और अप्रभावित होने में ओरा का हाथ है।

लेश्या के नामों से यह अभिव्यक्त होता है कि ये नाम अंतर् से निकलने वाली आभा के आधार पर रखे गए हैं। उनका जैसा रंग है, व्यक्ति का मानस भी वैसा ही है। प्रशस्त और अप्रशस्त में रंगों का प्राधान्य है। कृष्ण, नील और कापोत-अप्रशस्त हैं, तैजस, पद्म और शुक्ल प्रशस्त हैं। वैज्ञानिकों ने 'ओरा' के प्रायः ये ही रंग निर्धारित किए हैं। वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हुआ है कि बाहर के रंग भी व्यक्ति को प्रभावित करते हैं। बाहरी रंगों का ध्यान-चिंतन कर हम आंतरिक रंगों को भी परिवर्तित कर सकते हैं।

रंग हमारे शरीर को प्रभावित करता है, हमारे मन को प्रभावित करता है। रंग चिकित्सा पद्धति आज भी चलती है। 'कलर थेरापी' यह पद्धति चल रही है। एक पद्धति है 'कास्मिक थेरापी' अर्थात् दिव्य किरण चिकित्सा। इसका भी रंग के साथ संबंध है। रंग और सूर्य की किरण दोनों के साथ इसका संबंध है। प्रकाश के साथ यह संयुक्त है। रंग हमारे शरीर और मन को विविध प्रकार से प्रभावित करता है। उससे रोग मिटते हैं, फिर वे रोग शारीरिक हो या मानसिक । मानसिक रोग चिकित्सा में भी रंग का विशिष्ट स्थान है। पागलपन को रंग के माध्यम से समाप्त कर दिया जाता है। रंग थोड़ा सा विकृत हुआ कि आदमी पागल हो जाता है। रंग की पूर्ति हुई कि आदमी स्वस्थ हो जाता है। शरीर में रंग की कमी के कारण अनेक बीमारियां उत्पन्न होती हैं। 'कलर थेरापी का यह सिद्धांत है कि बीमारी के कोई कीटाणु नहीं होते। रंग की कमी के कारण बीमारी होती है। जिस रंग की कमी हुई, उसकी पूर्ति कर दो, आदमी स्वस्थ हो जाएगा, बीमारी मिट जाएगी। तो बीमारी का होना या बीमारी का न होना या स्वस्थ होना, यह सारा रंगों के आधार पर होता है।

हमारे चिंतन के साथ भी रंगों का संबंध है। मन में खराब चिंतन आता है, अनिष्ट बात उभरती है, अशुभ सोचते हैं, तब चिंतन के पुद्‌गल काले वर्ण के होते हैं। लेश्या कृष्ण होती है। अच्छा चिंतन करते हैं, हित चिंतन करते हैं, शुभ सोचते हैं तब चिंतन के पुद्‌गल पीत वर्ण के होते हैं, पीले वर्ण के होते हैं। लाल वर्ण के भी हो सकते हैं और श्वेत वर्ण के भी हो सकते हैं। उस समय तेजोलेश्या होगी या पद्म लेश्या होगी या शुक्ल लेश्या होगी। बुरे चिंतन के पुद्‌गलों का वर्ण है काला और अच्छे पुद्‌गलों का वर्ण है पीला, लाल या श्वेत। कितना बड़ा संबंध है रंग का चिंतन के साथ! जिस प्रकार का चिंतन होता है उसी प्रकार का रंग होता है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री गंगाजी (चित्तौड़) दीक्षा क्रमांक 159

साध्वीश्री स्वभाव से सरल, हृदय से गंगा नीर की तरह निर्मल, गण की गरिमा बढ़ाने वाली थी। तप के प्रति आपकी विशेष रुचि थी। आपने उपवास, बेल, तेले आदि बहुत तप किया तथा पांच बार मासखमण की तपस्या थी।

7 वर्ष के संयम पाल अंतिम समय में संलेखना तप चोला, उपवास, बेला और तेला किया। तेले के दिन अनशन स्वीकार किया। 12 प्रहर का तिविहार और ३ प्रहर का चौविहार अनशन आया।

– साभारः शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

क्रान्ति का सिंहनाद

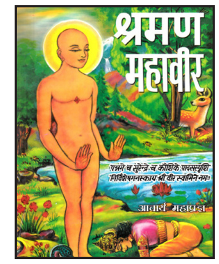

'जैसे पोली मुट्ठी और मुद्रा-शून्य खोटा सिक्का मूल्यहीन होता है, वैसे ही व्रतहीन साधु मूल्यहीन होता है। वैडूर्य मणि की भांति चमकने वाला कांच जानकार के सामने मूल्य कैसे पा सकता है?

एक व्यक्ति ने भगवान् से पूछा- 'भन्ते! साधुत्व और वेश में क्या कोई सम्बन्ध है'?

भगवान् ने कहा-'कोई भी सम्बन्ध नहीं है, यह मैं कैसे कहूँ? वेश व्यक्ति की आन्तरिक भावना का प्रतिबिम्ब है। जिसके मन में निस्पृहता के साथ-साथ कष्ट-सहिष्णुता बढ़ती है, वह अचेल हो जाता है। यह अचेलता का वेश उसके अन्तरंग का प्रतिबिम्ब है।'

'भंते ! कुछ लोग निस्पृहता और कष्ट-सहिष्णुता के बिना भी अनुकरण बुद्धि से अचेल हो जाते हैं। इसे मान्यता क्यों दी जाए?'

भगवान् - 'इसे मान्यता नहीं मिलनी चाहिए। पर अनुकरण किसी मौलिक वस्तु का होता है। मूलतः वेश आतरिक भावना की अभिव्यक्ति है। उसका अनुकरण भी होता है, इसलिए साधुत्व और वेश में सम्बन्ध है, यह भी मैं कैसे कहूं।'

मैं चार प्रकार के पुरुषों का प्रतिपादन करता हूं:

१. कुछ पुरुष वेश को नहीं छोड़ते, साधुत्व को छोड़ देते हैं।

२. कुछ पुरुष साधुत्व को नहीं छोड़ते, वेश को छोड़ देते हैं।

३. कुछ पुरुष साधुत्व और वेश- दोनों को नहीं छोड़ते।

४. कुछ पुरुष साधुत्व और वेश- दोनों को छोड़ देते हैं।

गोष्ठी के दूसरे सदस्य ने पूछा- 'भंते! आज हमारे देश में बहुत लोग साधु के वेश में घूम रहे हैं। हमारे सामने बहुत बड़ी समस्या है, हम किसे साधु मानें और किसे असाधु ?'

'भगवान् ने कहा- 'तुम्हारी बात सच है। आज बहुत सारे असाधु साधु का वेश पहने घूम रहे हैं। वे भोली-भाली जनता में साधु कहलाते हैं। किन्तु जानकार मनुष्य उन्हें साधु नहीं कहते।'

'भंते! वे साधु किसे कहते हैं?'

भगवान् ने कहा-

'ज्ञान और दर्शन से संपन्न

संयम और तप में रत।

जो इन गुणों से समायुक्त है

जानकार मनुष्य उसे साधु कहते हैं।

वैदिक परम्परा ने गृहस्थाश्रम को महत्त्व दिया और श्रमण-परम्परा ने संन्यास को। साधना का मूल्य गृहस्थ और साधु के वेश से प्रतिवद्ध नहीं है। वह संयम से प्रतिबद्ध है।

अभयकुमार ने भगवान् से पूछा- 'भंते! भगवान् भिक्षु को श्रेष्ठ मानते हैं या गृहस्थ को?'

भगवान् ने कहा- 'मैं संयम को श्रेष्ठ मानता हूं। संयमरत गृहस्थ और भिक्षु दोनों श्रेष्ठ हैं। असंयमरत गृहस्थ और भिक्षु दोनों श्रेष्ठ नहीं हैं।'

'भंते! क्या श्रमण भी संयम से शून्य होते हैं?'

भगवान् ने कहा- 'यह अन्तर का आलोक न सब भिक्षुओं में होता है, और न सब गृहस्थों में।

गृहस्थ हैं नाना शीलवाले।

सब भिक्षुओं का शील समान नहीं होता।

'कुछ भिक्षुओं से गृहस्थ का संयम अनुत्तर होता है।

सब गृहस्थों से भिक्षु का संयम अनुत्तर होता है।

(क्रमशः)

17 सितम्बर 2025 को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0 को लेकर देश भर में उत्साह का माहौल

MEGA BLOOD DONATION DRIVE 17th SEPTEMBER 2025

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के माध्यम से एक मेगा ब्लड डोनेशन कैंप 17 सितंबर 2025 को हो रहा है। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी बहुत बड़ी मात्रा में लोग इस ब्लड कैंप से जुड़ेंगे और निश्चित ही हम सभी का इसमें सहयोग हो, ऐसा मैं आप सभी से निवेदन करूंगा। पूरे देश में यह आयोजन हो रहा है और इसके माध्यम से मानव सेवा का एक संदेश जा रहा है। हम सभी जन इस यात्रा में जुड़ें।

श्री जी. किशन रेड्डी
केंद्रीय मंत्री, कोयला एवं खनन मंत्रालय

आप सबसे यह अपील करना चाहूंगी कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का जो यह मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव 17 सितंबर 2025 को होने जा रहा है। इस दिन सिर्फ भारत में नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों में एक साथ एक बहुत ही बड़ा ब्लड डोनेशन कैंपेन होने जा रहा है, जो ऐतिहासिक और अपने आप में एक वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने वाला है। मैं आप सबसे निवेदन करूँगी कि आप सब इस ब्लड डोनेशन कैंपेन का बढ़ चढ़कर हिस्सा बनें और सभी अपने संपर्क में आने वालों को भी मोटिवेट करें कि वे भी ब्लड डोनेट करें। मैं विशेषकर महिलाओं को निवेदन करूंगी कि वे इस डोनेशन ड्राईव में सक्रिय रूप से भाग लेकर इसका हिस्सा बनें।

सिद्धि सोमानी जौहरी
मिस इंडिया इंटरनेशनल
नेशनल ब्रांड एम्बेसेडर फॉर एम्पॉवरमेंट

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की ओर से एक विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। रक्तदान यानि महादान। रक्त का दान करने वाला ना धर्म देखता है ना जाति देखता है, बस प्राण और जीवनदान देने को देखता है। मैं आप सभी से निवेदन करता हूं कि 17 सितम्बर 2025 को आप लोग अधिक से अधिक संख्या में इस अभियान में जुड़ें।

श्री छोटू सिंह रावणा
लोक गायक

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद और भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में 17 सितंबर 2025 को वैश्विक स्तर पर रक्तदान श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है। मैं आप सभी से निवेदन करता हूं कि आप इस श्रृंखला का हिस्सा बनिए। इस पुनीत कार्य का हिस्सा बनिए। रक्तदान के आहवान की कुछ पंक्तियां आपके सामने रखता हूँ।

रक्त का अभाव ना हो, आओ हम सन्धान करें।
रक्त का अभाव ना हो, आओ हम सन्धान करें।
रक्तदाता वाली अपनी, आओ हम पहचान करें।
रक्तदाता वाली अपनी, आओ हम पहचान करें।
बिना रक्त के अब कोई भी जान नहीं जाने पाए।
बिना रक्त के अब कोई भी जान नहीं जाने पाए।
रक्तदान हम रक्तदान सब रक्तदान आहवान करें।
रक्तदान हम रक्तदान सब रक्तदान आहवान करें।
मानव को ही मानव के सदा काम आना होगा।
मानव को ही मानव के सदा काम आना होगा।
एक खून वाला रिश्ता हमको सदा निभाना होगा।
रक्तदान की श्रृंखला का, आओ हम निर्माण करें।
रक्तदान हम रक्तदान सब रक्तदान आहवान करें।
रक्तदान हम रक्तदान सब रक्तदान आहवान करें।

राष्ट्रीय कवि डॉ. सुरेन्द्र जैन, बाजपुर उत्तराखंड

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा संचालित रक्तदान अभियान के तहत मैं अपना निवेदन अपनी कविता की इन पंक्तियों के साथ देश के तमाम रक्तदाताओं से करना चाहूँगा।

वक्त की बेहद कमी है, इसलिए कुछ वक्त दो।
वक्त की बेहद कमी है, इसलिए कुछ वक्त दो
और वक्त के संग भावनाएं भाव से अनुरक्त दो।
वक्त की बेहद कमी है इसलिए कुछ वक्त दो ।
और वक्त के संग भावनाएं भाव से अनुरक्त दो।
आज तेयुप कर रहा है दानवीरों से विनय।
देश को तो देश हित में आप अपना रक्त दो।
आज तेयुप कर रहा है दानवीरों से विनय।
देश को तो देश हित में आप अपना रक्त दो।
प्राण रक्षा हित हमेशा एक नया मदमूल दो।
प्राण रक्षा हित हमेशा एक नया मदमूल दो।
औषधि के तौर पर इस विश्व को माजूम दो।
क्या पता कब किस जरूरतमंद को जीवन मिले।
इसलिए आगे बढ़ो और प्रेमपूरित खून दो।
क्या पता कब किस जरूरतमंद को जीवन मिले।
इसलिए आगे बढ़ो और प्रेमपूरित खून दो।

इस अपील और इस निवेदन के साथ कि हम अधिकाधिक संख्या में रक्तदान करें। तेरापंथ युवक परिषद की ओर से और व्यक्तिशः अपनी ओर से भी यही निवेदन।

कवि राजेश विद्रोही
लाडनूं (राजस्थान)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित रक्तदान की सेवा अपने आप में बहुत ही अनूठा कार्य है, जो मानवता की सेवा के प्रकल्प के रूप में किया जा रहा है। यह ऐसा सेवा का प्रकल्प है, जो आम जन को एक जीवनदान देने का कार्य करेगा। मैं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद को बहुत-बहुत धन्यवाद और साधुवाद देता हूं और शुभ मंगलकामनाएं करता हूं कि भगवान इनको शक्ति प्रदान करें और यह ऐसे सेवा के प्रकल्प तेरापंथ युवक परिषद सदैव करती रहे।

महंत निर्मलदास जी
राष्ट्रीय सचिव, भारत साधु समाज, आसोतरा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद यानि अभातेयुप को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं। मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हो रही है कि अभातेयुप 17 सितंबर 2025 को विश्व स्तर पर मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत रक्तदान शिविरों का आयोजन करने जा रही है। मैं सभी देशवासियों से आग्रह करूंगा कि वह इस नेक कार्य में बढ़ चढ़कर हिस्सा लें और दूसरों को भी प्रेरित करें। एक बार फिर अभातेयुप को मेरी तरफ से ढेर सारी शुभकामनाएं, बधाईयां और जय हिन्द।

श्री शांतनु मुखर्जी (शान)
बॉलीवुड सिंगर

Harsh Sanghvi

सत्यमेव जयते

Minister of State
Sports, Youth Service, Co-ordination of voluntary organization, Non-resident Gujaratis' Division, Transport, Gruh Rakshak Dal and Gram Rakshak Dal, Civil Defence, Jail, Border Security (All Independent Charge), Home and Police Housing, Industries, Cultural Activities (State Minister)
Government of Gujarat

893

Date: 26 AUG 2025

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदीजी के जन्मदिवस के पावन अवसर पर आयोजित हो रही आपकी आगामी भव्य पहल मेगा "ब्लड डोनेशन ड्राइव - रक्तदान अमृत महोत्सव २.०" के लिए हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

"रक्त के अभाव में किसी की मृत्यु न हो" - इस पावन संकल्प को धारण कर अभातेयुप ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक अद्वितीय पहचान बनाई है। मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव केवल एक सामाजिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि करुणा, जिम्मेदारी और सामूहिक शक्ति का सशक्त उदाहरण है। आपके इस अद्वितीय प्रयास को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स, एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स एवं वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज होने का गौरव प्राप्त हुआ है, जो सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए गर्व का विषय है।

जैन श्वेतांबर तेरापंथ संघ के ग्यारहवें आचार्य, आचार्य श्री महाश्रमण जी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से अभातेयुप निरंतर आगे बढ़ रहा है। उनका संदेश - अहिंसा, संयम, नैतिकता और निःस्वार्थ मानव सेवा - आपके प्रत्येक कार्य में झलकता है और इस आंदोलन को केवल सामाजिक ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक दिशा भी प्रदान करता है।

इस पुनीत कार्य से अभातेयुप ने समाज के हर वर्ग - राजनीतिक नेताओं, फिल्मी जगत, खेल जगत और आम नागरिकों को एक साथ जोड़कर मानवता की सेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इस अवसर पर मैं "रक्तदान अमृत महोत्सव २.०" की सफलता के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पावन अभियान भारत को रक्त के मामले में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक सशक्त कदम सिद्ध हो और समाजसेवा के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ स्थापित करे, यही मंगलकामना है।

भवदीय,

(हर्ष संघवी)

प्रति,
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद
युवालोक, जैन विश्व भारती परिसर
लाडनूं -३४१३०६ जि. दिद्वाना कुचामन , राजस्थान
मो. ८२९०६२६७६७

Swarnim Sankul - 2, 1st Floor, Sardar Bhavan, New Sachivalaya, Gandhinagar-382 010
Phone No.: (0) 079-23251958/59/60/61/63 | **Fax No.:** 079-23251962
Website: www.harshsanghavi.in | **E-mail:** min-home@gujarat.gov.in

: शुभकामनाओं सहित :

AOM GROUP

www.aomgroup.org

मानव हैं मानवता में प्राण भरें, आओ संकल्पित हो रक्तदान करें

17 सितम्बर 2025 को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0 को लेकर देश भर में उत्साह का माहौल

माननीय श्रीमती सीतारमण
वित्त मंत्री-भारत सरकार

श्री जे.पी. नड्डा
केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री-भारत सरकार

श्री देवेन्द्र फडनवीस
मुख्यमंत्री-महाराष्ट्र

श्री दयाशंकर मिश्रा
आयुष मंत्री-उत्तर प्रदेश

श्री शिवाजी सुतार मारुति
आईआरटीएस अधिकारी, ओएसडी-रेल मंत्री

श्री संजय सावरकरे
वस्त्रोद्योग मंत्री-महाराष्ट्र

श्री डॉ. सुकांत मजूमदार
केंद्रीय आयुष मंत्री-भारत सरकार

श्री झब्बर सिंह खर्रा
केंद्रीय आयुष मंत्री-भारत सरकार

श्री गौतम दक
सहकारिता मंत्री-राजस्थान

श्री आशीष शेलार
सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग-महाराष्ट्र

श्री प्रताप सरनाईक
परिवहन मंत्री-महाराष्ट्र

श्री आशुतोष गर्ग
निजी सचिव-स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री

श्री संतोष पांडेय
युवा एवं खेल मंत्री-लुम्बिनी प्रदेश, नेपाल

श्री राजीव दासोत
पूर्व DG एवं IPS -राजस्थान जेल विभाग

श्री सुनील सा सिंघी
चेयरमेन-राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड

श्री हर्ष मंगला
निदेशक-राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, भारत सरकार

श्री योगेश मांडिया
विशेष सशस्त्र पुलिस कमांडेंट-केरल

श्री सीमनाथ कुमार सिंह
पुलिस आयुक्त, बैंगलोर सिटी

श्री के एस शहंशाह
(आईपीएस) रेल्वे पुलिस अधिक्षक-केरल

श्री नीरज पौडेल
पुलिस निरिक्षक-नेपाल

17 सितम्बर 2025 को अभातेयुप रक्तदान का एक नया इतिहास रचने जा रही है, जिसमें 7500 से अधिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाएगा। अपेक्षित है कि सभी लोग उस दिन अपनी औद्योगिक इकाईयों, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, अपने संपर्क के व्यापारिक संगठनों क माध्यम से रक्तदान शिविरों का आयोजन करवा कर मानवता के इस यज्ञ में अपनी आहुति प्रदान करें। कृपया रक्तदान शिविर रजिस्ट्रेशन के लिए या अन्य किसी जानकारी के लिए www.abtypmbdd.org पर लॉगिन करें।

/megablooddonationdrive | /iMdonatingBlood | mbdd_official | www.abtypmbdd.org

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

लक्ष्मण रेखाएं

मंत्री की इस प्रशंसा का उत्तर आचार्य भिक्षु ने एक पद्य में दिया जो इस प्रकार है–

बुद्धि जिणांरी जाणीयै, जे सेवै जिन-धर्म।
अवर बुद्धि किण कांम री, सो पड़िया बांधै कर्म ।।

बुद्धि वही प्रशंसनीय है, जो धर्म के आचरण में लगे। वह बुद्धि व्यर्थ है, जिससे बन्धन बढ़े।

स्वामीजी का तर्कबल और बुद्धिबल जितना प्रबल था, उससे कहीं अधिक प्रबल था उनका श्रद्धा-बल। उनका जीवन बुद्धि और श्रद्धा का संगमस्थली था। निम्नलिखित पंक्तियों में उनका श्रद्धा-भाव प्रकट हो रहा है–

अध्येन अठाबीसमा उत्तराध्येन में, मोक्ष मार्ग कह्या च्यार।
ज्ञान-दर्शन-चरित्र ने तप बिना, नहिं श्रधूं धर्म लिगार।।

देव अरहंत निर्ग्रन्थ गुरु, माहरे केवलीए भाषित धर्म।
ए तीनूं ई तत्त्व सेठाकर झालीया और छोड़ दिया सहु मर्म ।।

'प्रभो! आपने सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप को मुक्ति का मार्ग कहा है। मैं इनके सिवाय और किसी तत्त्व को धर्म नहीं मानता। मैं अर्हत् को देव, निर्ग्रन्थ को गुरु और आपके द्वारा प्ररूपित मार्ग को ही धर्म मानता हूं। मेरे लिए और सब भ्रमजाल है। मेरे लिए आपकी आज्ञा ही सर्वोपरि प्रमाण है।'

आचार्य भिक्षु भगवान महावीर और उनकी वाणी पर स्वयं को न्योछावर कर चलते हैं। उन्होंने भगवान की आज्ञा में ही धर्म माना है, उसके बाहर नहीं। एतद्विषयक उनके अनमोल बोल द्रष्टव्य हैं–

कोई जिण आगन्या वारे धर्म कहे, जिण आज्ञा माहे कहे छे पाप हो।
ते दोनूं बिध बूडे छे बापड़ा, कूडो कर अग्यानी विलाप हो।।

आपरो धर्म आपरी आज्ञा मझे, आपरो धर्म नहीं आपरी आज्ञा बार हो।
जिण धर्म जिण आज्ञा बारे कहे, ते पूरा छे मूढ़ गिंवार हो।।

कुछ लोग आपकी आज्ञा के बाहर भी धर्म कहते हैं और आपकी आज्ञा में भी पाप कहते हैं। वे दोनों ओर से डूब रहे हैं। आपका धर्म आपकी आज्ञा में है। आपकी आज्ञा के बाहर आपका धर्म नहीं है। जो जिनधर्म को जिन-आज्ञा के बाहर बतलाते हैं, वे मूढ़ हैं।

भगवान महावीर स्वामीजी के परम आराध्य थे। किन्तु उनकी समालोचक और सत्यान्वेषी दृष्टि महावीर की भी समीक्षा करने से नहीं रुकी। वैश्यायन ऋषि गोशालक को मारने के लिए उष्ण तेजोलेश्या का प्रयोग कर रहा था। तत्काल भगवान ने गोशालक को बचाने के लिए शीतल तेजोलेश्या नामक योगशक्ति का प्रयोग किया और उससे उसे बचा लिया। स्वामीजी की साध्य-साधन की मीमांसा के अनुसार यह कार्य छद्मस्थ महावीर की राग-मुक्ति को प्रमाणित नहीं करता। इसलिए उन्होंने कहा- इस प्रसंग में भगवान की वीतराग-साधना में चूक हुई; क्योंकि शक्ति का प्रयोग शुद्ध साधन नहीं है। उनकी समीक्षा की भाषा इस प्रकार है-

छः लेश्या हूंती जद वीर में जी, हूंता आठूंई कर्म।
छद्मस्थ चूका तिण समे जी, मूरख थापे धर्म।।

श्रद्धा और तटस्थ समालोचना में कोई टकराव नहीं है, यह भिक्षुवाणी से प्रमाणित होता है। तटस्थ समालोचक के लिए अपने और पराए का अन्तर नहीं होता। उसका सूत्र होता है- **'शत्रोरपि गुणा वाच्या, दोषा वाच्या गुरोरपि।'**

आचार्य भिक्षु एक आत्मार्थी, त्यागी और विरागी व्यक्ति थे। उनकी नीति विशुद्ध थी, सत्यस्थित थी। उन्होंने आचार-विचार की जो रेखाएं खींचीं, वे नीतिमत्ता और जिनवाणी पर आधारित थीं।

पच्चीस वर्ष की युवा अवस्था में दीक्षित मुनि भीखणजी अपने गुरु पूज्य श्री रघुनाथजी के पास जैन आगमों का स्वाध्याय करते, तब उनका मन आन्दोलित होता, समाधान पाने के लिए समुत्सुक हो उठता। उन्हें लगता जिनवाणी और हमारे पाल्यमान आचार में कुछ विसंगति है। वे गुरु-चरणों में अपने प्रश्न रखते। गुरुवर सोचते कि यह पापभीरु है, वैरागी है, विनम्र और भक्त है। ये प्रश्न मात्र इसकी पापभीरुता के पारिणामस्वरूप हैं।

इस स्थिति से पता चलता है कि उनके मन में आगम-निर्देशों के प्रति कितनी आस्था थी। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल
अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

सितम्बर 2025
सप्ताह के विशेष दिन

18 सितम्बर
भगवान पद्यप्रभु जन्म एवं भगवान अरिष्टनेमि च्यवन कल्याणक

19 सितम्बर
भगवान पद्यप्रभु दीक्षा कल्याणक

21 सितम्बर
भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक एवं पक्खी

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री सुपारसमलजी (बीदासर) (गणबाहर) दीक्षा क्रमांक 411

मुनिश्री ने सं 1996 राजनगर में लघुसिंह निष्क्रीडित तप की प्रथम परिपाटी सम्पन्न की। सं 2010 में आप गण से मुक्त हो गए।

– साभार : शासन समुद्र –

जीवन निर्माण की शाला है ज्ञानशाला

साक्री।

डॉ. मुनि आलोक कुमार जी के सान्निध्य में तथा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, साक्री के तत्वावधान में खान्देश स्तरीय ज्ञानशाला दिवस का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर खान्देश क्षेत्र के जलगांव, शहादा, बोराला से लगभग 70 ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मुनि डॉ. आलोक कुमार जी ने कहा कि ज्ञानशाला हमारे जीवन निर्माण की शाला है। जीवन में संस्कारों का जागरण अपेक्षित है। संस्कारी बच्चे समाज की नींव को मजबूत बनाते हैं। गुरुदेव तुलसी ने भावी पीढ़ी को सशक्त बनाने के लिए ज्ञानशाला का उपक्रम समाज के सामने रखा। अभिभावक अधिकाधिक संख्या में बच्चों को नियमित रूप से ज्ञानशाला भेजें। सभा अपना दायित्व निभा रही है। ज्ञानशाला के प्रशिक्षकगण साधुवाद के पात्र हैं।

इस अवसर पर मुनि हिम कुमार जी ने कहा – संस्कारों से संस्कृति महान बनती है। आज संस्कारों का जो ह्रास हो रहा है, उसके पीछे संस्कारों की कमी दृष्टिगोचर हो रही है। ज्ञानशाला संस्कार निर्माण की अनूठी पाठशाला है। मुनिश्री ने सुंदर गीतिका के माध्यम से सभी को प्रेरित किया। तेरापंथ धर्मसंघ द्वारा संचालित यह उपक्रम संस्कारों के निर्माण की दिशा में अच्छा कार्य कर रहा है। ज्ञानशाला का उद्देश्य बालकों में धार्मिक ज्ञान और संस्कार देना है।

सभी क्षेत्रों के समागत ज्ञानार्थियों ने नाटिकाओं के माध्यम से रोचक प्रस्तुतियां दीं – जैसे समय की कीमत, चार गति का वर्णन, आठ कर्मों की जानकारी इत्यादि, जिन्हें सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं का पूर्ण योगदान रहा। ज्ञानार्थियों को तेरापंथी सभा द्वारा प्रोत्साहन स्वरूप पारितोषिक प्रदान किया गया। प्रस्तावना जोशिला पगारिया ने रखी। इंदरचंद कांकरिया ने स्वागत भाषण दिया। साक्री प्रशिक्षिकाओं द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई। धन्यवाद ज्ञापन पियूष कर्नावट ने किया। टीना पगारिया ने प्रासंगिक विचार रखे।

प्रतियोगिता का संचालन मुनि हिम कुमार जी एवं शहादा से समागत आलोक गेलडा ने किया। कार्यक्रम के संयोजक सोहन कांकरिया और सह-संयोजक सौरभ कर्नावट रहे। स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद का सराहनीय श्रम रहा। सोशल मीडिया का दायित्व संकेत कर्नावट ने संभाला। कार्यक्रम का संचालन भूषण कांकरिया ने किया।

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

इचलकरंजी।

तेरापंथ भवन इचलकरंजी में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। मंगलाचरण ज्ञानार्थियों द्वारा मंगल संगान से हुआ। ज्ञानशाला संयोजिका रजनी पारख ने स्वागत भाषण दिया तथा स्थानीय ज्ञानशाला की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। ज्ञानशाला संचालक संस्था तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक बाफना ने प्रशिक्षिकाओं का आभार व्यक्त किया एवं बच्चों को ज्ञानशाला भेजने का आह्वान किया।

ज्ञानार्थियों ने विभिन्न प्रस्तुतियां दीं – जमीकंद त्याग का महत्व, योगा द्वारा सिद्धशिला का निर्माण, ₹सपनों को सच करती संस्कार शाला - ज्ञानशाला की उपयोगिता₹, भिक्षु दृष्टांत पर आधारित नुक्कड़ नाटिका, ₹साइबर क्राइम₹ पर आधारित नाटिका, ₹गुरुवर का पैगाम हम घर-घर पहुँचाएंगे₹, ₹सबसे प्यारी ये फुलवारी ज्ञानशाला है₹ तथा ज्ञानशाला गीत पर नन्हे-मुन्ने बच्चों ने रोचक नृत्य प्रस्तुत किया। अंत में प्रशिक्षिकाओं ने ज्ञानशाला के महत्व को शब्द-चित्र द्वारा प्रस्तुत किया तथा ₹सही राह दिखाए₹ गीतिका की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के पूर्व ज्ञानार्थियों तनीष छाजेड़, लक्षी पटावरी और जैनी बालर ने भी अपने अनुभव साझा किए। नमस्कार महामंत्र की थीम के साथ प्रशिक्षिका शिल्पा बाफना एवं इंद्रा बालर ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। सह संयोजिका नीतू छाजेड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया। प्रशिक्षिकाएं सीमा डागा, पूजा आंचलिया, सुनीता चोरडिया, वंदना पटवारी, शांता सालेचा एवं डिम्पल भंसाली का विशेष सहयोग रहा। शिशु संस्कार बोध परीक्षा 2024 के प्रमाण पत्र एवं पारितोषिक का वितरण किया गया।

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

कोयंबटूर।

स्थानीय तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानार्थी ओजस बुच्चा व आर्यन बाफना ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की। इसके बाद ज्ञानशाला के बच्चों ने भिक्षु अष्टकम के माध्यम से मंगलाचरण किया तथा ₹अर्हम अर्हम की वंदना₹ गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला प्रभारी कनकप्रभा बुच्चा ने सभी आगंतुकों का स्वागत-अभिनंदन करते हुए कहा कि ज्ञानशाला गुरुदेव श्री तुलसी का अनुपम उपहार है, जो बच्चों के उज्ज्वल भविष्य का सुनिश्चित द्वार है। इसके पश्चात बच्चों ने तीर्थंकर वंदना की आकर्षक प्रस्तुति दी। ₹एबीसीडी – चढ़ो सफलता की सीढ़ी₹ पर आधारित प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया।

सभा अध्यक्ष देवीचंद मंडोत ने स्वागत-अभिनंदन करते हुए कहा कि बच्चों को अवश्य ही ज्ञानशाला भेजना चाहिए, क्योंकि यह उनके विकास का एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में बच्चों ने ₹आओ-आओ भिक्षु स्वामी की₹ गीत की सुंदर प्रस्तुति दी। ₹परिग्रह क्या है और क्यों ज्यादा परिग्रह नहीं करना चाहिए₹ विषय पर बच्चों ने अत्यंत सारगर्भित नाटिका प्रस्तुत की। ज्ञानार्थी गौतम बोथरा ने केशिया पर भिक्षु स्वामी अंतर्यामी गीत की मनमोहक प्रस्तुति दी।

इसके बाद ट्रस्ट अध्यक्ष बच्छराज गिडिया ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया और सभी को ज्ञानशाला से जुड़ने की प्रेरणा दी। नवनिर्वाचित अध्यक्ष चैनरूप सेठिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने भी एक्ट के माध्यम से आकर्षक प्रस्तुति दी। सभा द्वारा सभी ज्ञानार्थियों को पुरस्कृत किया गया और प्रशिक्षिकाओं का भी सम्मान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन मुख्य प्रशिक्षिका दीपिका बोथरा ने किया। कार्यक्रम के प्रथम चरण का संचालन ज्ञानार्थी ओजस बुच्चा और आर्यन बाफना ने किया, जबकि द्वितीय चरण का संयोजन प्रशिक्षिका भावना मंडोत और प्रशिक्षिका विजयलक्ष्मी बाफना ने संयुक्त रूप से किया।

व्यक्तित्व निर्माण और जीवन मूल्यों की सुदृढ़ नींव है ज्ञानशाला

शाहदरा, दिल्ली।

तेरापंथ महासभा के उपक्रम ज्ञानशाला के अंतर्गत इस वर्ष पूरे पूर्वी दिल्ली क्षेत्र की ज्ञानशालाओं का ज्ञानशाला दिवस ओसवाल भवन, विवेक विहार में बड़े उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। यह अवसर ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में सूर्यनगर, लक्ष्मीनगर, गांधीनगर, वसुंधरा और ओसवाल भवन सहित विभिन्न ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थियों ने नाटक, गीत और कविताओं जैसी आकर्षक प्रस्तुतियों के माध्यम से धार्मिक ज्ञान, संस्कार और परंपराओं का जीवंत चित्रण किया। नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा ज्ञानशाला गीत के मंगल संगान के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

अपने प्रवचन में मुनि उदितकुमार जी ने ज्ञानशाला में आने वाले और न आने वाले विद्यार्थियों के तुलनात्मक संस्कारों का अंतर स्पष्ट करते हुए कहा कि जो बच्चे नियमित रूप से ज्ञानशाला आते हैं, उनके विचार, व्यवहार और बोलचाल में सकारात्मकता, अनुशासन और संस्कार झलकते हैं, जबकि जो इससे वंचित रहते हैं, उनमें यह गहराई और संतुलन कम दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि ज्ञानशाला केवल धार्मिक शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण और जीवन मूल्यों की सुदृढ़ नींव है। मुनिश्री ने अभिभावकों से आह्वान किया कि वे बच्चों को नियमित रूप से ज्ञानशाला भेजें, ताकि आने वाली पीढ़ी में संस्कारों की ज्योति प्रज्ज्वलित रह सके।

मुनि रम्य कुमार जी का सामयिक वक्तव्य भी हुआ। दिल्ली ज्ञानशाला की संचालक संस्था तेरापंथ सभा, दिल्ली की ओर से रंजीत भंसाली, राष्ट्रीय ज्ञानशाला परामर्शिका सरोज छाजेड़ और तेरापंथ सभा शाहदरा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी ने अपनी प्रासंगिक अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत कीं। समाज के गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम में बच्चों की सुंदर और भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने सभी को भाव-विभोर कर दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन निशा चौरडिया ने किया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025 प्रतियोगिता का आयोजन

हावड़ा।

अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा अणुविभा निर्देशित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025* का जिला स्तरीय आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी ट्रस्ट भवन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत से हुआ, स्वागत वक्तव्य समिति अध्यक्ष दीपक नखत ने दिया। अणुव्रत आचार संहिता एवं विद्यार्थी अणुव्रत का वाचन राष्ट्रीय सहमंत्री पंकज राय सेठिया के निर्देशन में हुआ। प्रतियोगिता में हावड़ा-बर्दवान क्षेत्र की 13 स्कूलों से 125 विद्यार्थियों ने 'संविधान की धार, मर्यादाओं का हो आधार' विषय पर चित्रकला, गायन, समूह गायन, भाषण, निबंध और कविता के माध्यम से अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की। निर्णायक मंडल में कोकिला कुंडलिया, मंजू कोठारी एवं सोनल सुराणा रहे।

ACC 2025 के बंगाल प्रभारी लीना सिंघी व सुनीता बैद सहित समिति के संरक्षण सदस्य पारस बरडिया, स्वेता चोरड़िया, ऋषभ दुधोडिया, कुसुम बैद एवं ममता चोरड़िया की सक्रिय भूमिका रही। प्रायोजक अलका अमरचंद एवं जय दुगड के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया गया।

कार्यक्रम का संचालन व आभार प्रदर्शन बिरेंद्र बोहरा ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
08 सितम्बर - 14 सितम्बर, 2025

जीवन निर्माण में है संस्कारों का महत्व

राजराजेश्वरी नगर।

साध्वी पुण्ययशाजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का भव्य आयोजन हुआ। राजराजेश्वरी नगर एवं केंगेरी ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी व प्रशिक्षिकाएं उत्साहपूर्ण रैली के साथ राजराजेश्वरी नगर तेरापंथ भवन पहुंचे।

साध्वी पुण्ययशाजी ने अपने उद्बोधन में बच्चों को प्रेरक कहानी के माध्यम से सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी तथा अभिभावकों को संदेश देते हुए कहा कि बच्चों को प्रथम संस्कार माता-पिता से ही मिलते हैं, तत्पश्चात पाठशाला एवं ज्ञानशाला के माध्यम से वे और अधिक संस्कारित होते हैं।

सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने अभिभावकों से आग्रह किया कि वे अपने बच्चों को नियमित रूप से ज्ञानशाला भेजें ताकि उनमें नैतिकता व जीवन मूल्यों का विकास हो सके। ज्ञानशाला संयोजिका नीतू बाफना ने सभी का स्वागत किया एवं केंगेरी ज्ञानशाला की संयोजिका पूनम दक ने भावाभिव्यक्ति दी।

राजराजेश्वरी नगर एवं केंगेरी के बच्चों ने ज्ञानशाला के महत्व और आवश्यकता को दर्शाते हुए प्रेरक नाटक एवं गीतिका की प्रस्तुतियां दीं।

कार्यक्रम का संचालन अमिता छाजेड़ ने तथा आभार प्रदर्शन सीमा सहलोत ने किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, ट्रस्ट, तेयुप, महिला मंडल के पदाधिकारी, बड़ी संख्या में अभिभावक एवं श्रावक समाज के सदस्य उपस्थित रहे।

संपत्ति के साथ दें संस्कारों की धरोहर

सिकंदराबाद।

तेरापंथ भवन, डीवी कॉलोनी (सिकंदराबाद) में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्वावधान में साध्वी डॉ. गवेषणा श्रीजी के सान्निध्य में हुआ। इस दिवस का आगाज़ हैदराबाद ज्ञानशाला परिवार ने संजीवैय्या पार्क में किया, जहां ज्ञानार्थियों ने "जल ही जीवन है" विषय पर आधारित नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत की। मारडपल्ली, बोवनपल्ली और कारखाना ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा दी गई इस शानदार प्रस्तुति को सुबह की सैर पर आए नागरिकों ने खूब सराहा तथा इसे देशभर में प्रसारित करने की अनुशंसा की। नाटिका के पश्चात ज्ञानशाला परिवार एक भव्य जागरूकता रैली में परिवर्तित हुआ, जो नेकलेस रोड होते हुए डीवी कॉलोनी तेरापंथ भवन पहुंची। रैली एवं कार्यक्रम में सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल और प्रशिक्षिकाओं ने पूर्ण भागीदारी निभाई। साध्वी मेरुप्रभाजी व साध्वी दक्षप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की, वहीं साध्वी मयंकप्रभाजी ने प्रेरक कहानी के माध्यम से ज्ञानशाला की आवश्यकता स्पष्ट की। साध्वी डॉ. गवेषणा श्रीजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि ज्ञानशाला आज की जीवनशैली में संस्कार निर्माण का अनमोल साधन है। उन्होंने अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा – "इंजीनियर, वकील या डॉक्टर की भूल छिप सकती है, पर संस्कारहीन परिवार की भूल पूरे समाज को प्रभावित करती है। इसलिए उत्तम माता-पिता वे हैं जो बच्चों को जन्म व संपत्ति के साथ संस्कारों की धरोहर भी देते हैं।"

मंचीय कार्यक्रम का आरंभ सभा अध्यक्ष सुशील संचेती के स्वागत भाषण से हुआ। महासभा प्रकोष्ठ द्वारा इस प्रवृत्ति को गुरुदेव तुलसी की महान देन बताया गया। आंचलिक संयोजक सीमा दस्साणी ने केंद्र स्तर की योजनाओं का परिचय कराया एवं कन्या संस्कार शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा ने वार्षिक रिपोर्ट दी, जिसे प्रशिक्षिकाओं व ज्ञानार्थियों ने संगीतमय प्रस्तुति के माध्यम से रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। धर्म परिषद् के समक्ष विभिन्न ज्ञानशालाओं ने नाटिका प्रस्तुत की। पूर्व ज्ञानार्थी हितांश बैद, निष्ठा नाहटा और सिद्धि पोकरणा ने अपने अनुभव साझा किए, वहीं अभिभावक रेणु बैंगाणी और रजत बैद ने ज्ञानशाला के प्रति अपने भाव व्यक्त किए।

बच्चों को प्यार और उपहार के साथ दें संस्कार

राजलदेसर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। तत्पश्चात ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं एवं ज्ञानार्थियों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी ने अभिभावकों को जागृत करते हुए कहा कि माता-पिता बच्चों को प्यार दें, उपहार दें, परंतु प्यार और उपहार के साथ संस्कार अवश्य दें। बच्चों को नियमित रूप से ज्ञानशाला में भेजें ताकि उनमें धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण हो सके। ज्ञानशाला आचार्यश्री तुलसी की अपूर्व देन है। उन्होंने बीज रूप में ज्ञानशाला का वपन किया था, जो आज वटवृक्ष के रूप में फलित हो रही है। ज्ञानशाला बच्चों में सद्संस्कारों का निर्माण करती है तथा उनके शारीरिक, मानसिक और भावात्मक विकास का सशक्त उपक्रम है। राजलदेसर की ज्ञानशाला के बच्चे भी अपना अधिक से अधिक विकास करें। प्रशिक्षिकाओं और तेरापंथ सभा के सहयोग से ज्ञानशाला निरंतर आगे बढ़ती रहे।

इस अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों ने 'ज्ञानशाला क्यों भेजें?' विषय पर नाटिका और कठपुतली का मंचन किया। प्रशिक्षिकाओं ने संवाद के माध्यम से 'परिवार में संस्कारों का महत्व' प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला प्रभारी हेमलता घोषल ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

साध्वी चैत्यप्रभा जी ने 'ज्ञानशाला क्या?' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए तथा प्रेरक घटनाओं के माध्यम से बच्चों को मार्गदर्शन दिया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष राजकुमार विनायक, महिला मंडल अध्यक्ष कुसुम छल्लानी तथा महिला मंडल की अन्य सदस्यों ने वक्तव्य और गीतिका के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए।

पुष्पा देवी संपतमल चिंडालिया, मन्नालाल बैद एवं माणकी देवी बैद द्वारा सभी बच्चों को उपहार वितरित किए गए। आभार ज्ञापन प्रशिक्षिका मोनिका बैद ने किया तथा कार्यक्रम का कुशल संयोजन प्रशिक्षिका निर्मला जैन ने संभाला। कार्यक्रम में ज्ञानार्थी बच्चों के माता-पिता, अभिभावक एवं बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

'रोज ज्ञानशाला जाएंगे नई रोशनी लाएंगे', 'हाय-हेलो छोड़िए, जय जिनेंद्र बोलिए', 'घर-घर जागे सद्संस्कार – ज्ञानशाला का यह उपहार', 'संस्कारों की प्रयोगशाला – हमारी प्यारी ज्ञानशाला', 'अभिभावकों से यह मनुहार – ज्ञानशाला भेजो हर रविवार' जैसे उद्घोषों के साथ बच्चों ने तेरापंथ भवन से एक नयनाभिराम रैली निकाली, जो कस्बे के मुख्य मार्गों से होती हुई पुनः तेरापंथ भवन पहुँची।

रैली में सभा, महिला मंडल, युवक परिषद्, कन्या मंडल एवं किशोर मंडल की सक्रिय भागीदारी रही।

मन की प्रसन्नता को बढ़ाने वाला होता है संयम का भाव

गांधीनगर, बेंगलुरु।

डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी के सान्निध्य में दीक्षार्थी मुमुक्षु प्रीत कोठारी का अभिनंदन कार्यक्रम जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा भवन, गांधीनगर में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि संयम का भाव मन की प्रसन्नता को बढ़ाने वाला होता है। जैन मुनि दीक्षा ग्रहण करने का अर्थ है – अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह रूपी महाव्रतों को जीवनभर के लिए स्वीकार करना। साधु जीवन का तात्पर्य है सुविधा का त्याग और अध्यात्म सुख की प्राप्ति। मुनिश्री ने गीतिका के माध्यम से मुमुक्षु के प्रति मंगलकामना करते हुए कहा – जिस सिंहवृत्ति से त्यागी जीवन की शुरुआत करने जा रहे हो, उसी उच्च भावना से गुरु दृष्टि की आराधना करना।

गुरु की दृष्टि में ही शिष्य की सृष्टि होती है। जन्म-जन्मांतरों के शुभकर्मों से ही व्यक्ति मंगलमय आचरण करते हुए संयममय जीवन जीने का संकल्प करता है।

मुनिश्री ने मुमुक्षु की माता संगीता कोठारी एवं पिता नरेश कोठारी को साधुवाद दिया कि इकलौते पुत्र होते हुए भी उन्होंने मुनि दीक्षा की आज्ञा प्रदान की। यह समाज के लिए उत्तम आदर्श उदाहरण है। 'नचिकेता' मुनि आदित्य कुमारजी ने भी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र से हुआ। ज्ञानशाला दिवस के उपलक्ष्य में ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीतिका प्रस्तुत की। शेषाद्रीपुरम एवं ओकलीपुरम ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थी बच्चों ने दीक्षार्थी भाई के लिए मंगलभावना से संवाद प्रस्तुत किया। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों तथा रामसिंह गुड़ा की बहनों ने गीत प्रस्तुत किए।

महिला मंडल मंत्री विजेता रायसोनी, तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली तथा रामसिंह गुड़ा सभा अध्यक्ष गौतम गादिया ने स्वागत भाषण दिया। भंवरलाल गादिया ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। जुगराज श्रीश्रीमाल ने जानकारी दी कि ज्ञानशाला गांधीनगर, बैंगलोर से प्रीत कोठारी के रूप में संभवतः यह 23वीं दीक्षा तेरापंथ धर्मसंघ में होने जा रही है।

तेरापंथ सभा के कार्यकर्ताओं ने भी समाज की ओर से मुमुक्षु प्रीत का अभिनंदन किया। कोठारी परिवार से नरेश कोठारी, लब्धि, अर्णव, जिया, सयानी धारीवाल एवं करुणा कोठारी ने मंगलभावना व्यक्त की। पारिवारिक बहनों ने गीत प्रस्तुत किया। खुशी, ख्याति एवं दीक्षित ने भी अपने विचार रखे।

दीक्षार्थी प्रीत ने सभी पारिवारिक जनों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि दादा-दादी और मम्मी-पापा के धार्मिक संस्कार ही आज मुझे यहां तक लेकर आए हैं। मैं संकल्प करता हूं कि आगे गुरु इंगित की आराधना करते हुए संयम जीवन जिऊंगा।

मैं मुनि पुलकित कुमारजी का आभारी हूं और कामना करता हूं कि मुनिश्री का आशीर्वाद सदा मेरे ऊपर बना रहे। कार्यक्रम में दीक्षार्थी का जीवन-परिचय दर्शाने वाली वीडियो भी प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002** पर व्हाट्सअप्प अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

बच्चों को स्विमिंग, डांस क्लासेस के साथ ज्ञानशाला में भी भेजें

नाथद्वारा।

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का भव्य आयोजन हुआ। रैली के साथ ज्ञानार्थी बच्चे, प्रशिक्षिकाएं एवं अभिभावक तेरापंथ सभा भवन पहुंचे। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी श्री द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं ज्ञानार्थियों के मंगलाचरण से हुआ।

साध्वी रचनाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ज्ञानशाला का शुभारंभ आचार्य तुलसी का जागृत अवस्था में लिया हुआ सपना है। भावी पीढ़ी को सुसंस्कारी बनाने, नींव को मजबूत करने और शुद्ध सात्विक जीवन जीने की कला सिखाने के लिए ज्ञानशाला की स्थापना हुई।

उन्होंने आगे कहा कि 21वीं शताब्दी का यह युग कंप्यूटर, लैपटॉप और मोबाइल जैसी तकनीकी शिक्षा से जुड़ा हुआ है। बच्चे और अभिभावक करियर को बेहतर बनाने में लगे हैं, वहीं श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति का ज्ञान – बड़ों का सम्मान, नम्रता, सहिष्णुता, सदाचार और सद्विचार गौण होते जा रहे हैं तथा पाश्चात्य संस्कृति हावी हो रही है। ऐसे समय में सुसंस्कारों की वृद्धि के लिए ज्ञानशाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपक्रम है।

साध्वी श्री ने कहा कि ज्ञानशाला में प्रशिक्षिकाएं बच्चों को रहना, कहना और सहना सिखाती हैं। उन्होंने अभिभावकों से आग्रह किया कि जैसे वे अपने बच्चों को स्विमिंग, डांस और पेंटिंग की कक्षाओं में भेजते हैं, वैसे ही उन्हें ज्ञानशाला जैसी प्रशिक्षण शाला में भी अवश्य भेजें ताकि बच्चे आदर और सम्मान करना सीख सकें।

ज्ञानशाला बच्चों के ब्रेन शार्पनिंग का स्थान है, जहां सम्यक ज्ञान से कर्मों की निर्जरा होती है। यह अच्छे संस्कार, अच्छी आदत और उत्तम चरित्र निर्माण का पवित्र स्थल है। साध्वी गीतार्थ प्रभा जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष शिवलाल डागलिया और महासभा कार्य समिति सदस्य कांतिलाल धाकड़ ने अपने विचार प्रस्तुत किए। जीविशा सामोता, कीवा सामोता, नमन बाफना, अर्हम बाफना, रिद्धि राठौर और हर्ष मेहता ने अपनी प्रसतुई दी।

ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका चेतना बाफना ने स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला संयोजिका सीमा डागलिया ने किया और आभार ज्ञापन सह संयोजिका रंजना कच्छारा ने प्रस्तुत किया। अंत में सभी ज्ञानार्थियों एवं प्रशिक्षिकाओं को पारितोषिक प्रदान किए गए, जिनके प्रायोजक ललित मेहता और सीता देवी पूजा मेहता रहे।

अंतराय कर्म को कैसे तोड़ें? कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर, बैंगलोर।

तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर के तत्वावधान में ₹अंतराय कर्म को कैसे तोड़े?' विषय पर कार्यशाला का आयोजन अर्हम भवन में साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में किया गया। साध्वी श्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि अंतराय कर्म की पाँच प्रकृतियाँ होती हैं, जिनसे जीव बंधन करता है और उन्हीं को तोड़कर मुक्त भी हो सकता है। दानांतराय की व्याख्या करते हुए साध्वीश्री ने समझाया कि जिसके भीतर सुपात्र दान की भावना होती है और जो दान का सही मूल्य समझता है, वही अपने अंतराय कर्म को तोड़ पाता है। आगमों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ सुपात्र दान से कर्म कटते हैं और शुभ आयुष्य कर्म का बंध होता है।

उन्होंने यह भी कहा कि यदि कोई व्यक्ति दान देकर पश्चाताप करता है, तो वह भवभ्रमणकारी कर्मों का बंधन करता है और अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए भटकता रहता है।

इस तथ्य को साध्वीश्री ने मम्मण सेठ का उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया। आगे उन्होंने बताया कि सेवा करने से भी अंतराय कर्म टूटता है। सेवा भावी व्यक्ति के वीर्यांतराय कर्म का क्षय या क्षयोपशम होता है, जिससे अनंत शक्ति, बल और सामर्थ्य प्राप्त होता है। साध्वीश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा कि अंतराय कर्म को तोड़ने के अनेक माध्यम हैं, बस हमें पुरुषार्थ की दिशा में निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र और भिक्षु स्तुति के साथ हुआ। इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्ष महिमा पटावरी, मंत्री सरिता छाजेड़, कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया तथा अखिल भारतीय तेरापंथ राष्ट्रीय कार्यसमिति से शशि नाहर सहित पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहे। अध्यक्ष महिमा पटावरी ने साध्वीश्री के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित की। इस कार्यशाला में लगभग 250 से अधिक भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

अणुव्रत से होता हित अहित का ज्ञान

चेन्नई।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में तथा अणुव्रत समिति, चेन्नई की आयोजना में नशा मुक्ति अभियान 'एलीवेट - एक्सपीरियंस द रियल हाई' कार्यशाला का आयोजन साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, साहुकारपेट, चेन्नई में सम्पन्न हुआ। साध्वी उदितयशाजी ने कहा कि नशे का सबसे बड़ा परिणाम यह है कि व्यक्ति स्वयं का भान खो देता है। इसके कारण वह अपने माता-पिता एवं परिजनों का सम्मान नहीं करता और अपने संस्कारों से च्युत हो जाता है। गुरुदेव तुलसी ने 75 वर्ष पूर्व ही भांप लिया था कि समाज में नशे की कुरीतियाँ घर कर सकती हैं। इसलिए उन्होंने अणुव्रत रूपी महान अवदान दिया। यह ऐसा अभियान है जो व्यक्ति को अपने हित-अहित का ज्ञान कराता है। अणुव्रत से जुड़कर युवा पीढ़ी हित-अहित को समझ सकती है और नशा मुक्त रह सकती है। साध्वीश्री के आह्वान पर उपस्थित श्रावक समाज ने जीवन भर नशा मुक्त रहने का संकल्प स्वीकार कर रक्षाबंधन की महत्वपूर्ण भेंट प्रदान की। मुंबई से समागत पधारे अणुविभा राष्ट्रीय नशा मुक्ति अभियान संयोजक मुदित भंसाली ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से बताया कि नशा करने से शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य दोनों प्रभावित होते हैं। रिश्तों में दरार आती है, आर्थिक हानि का सामना करना पड़ता है, कानूनी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं और सबसे अधिक समाज में अपमान सहन करना पड़ता है। अध्यक्षा सुभद्रा लुणावत ने स्वागत तथा मंत्री कुशल बाँठिया ने आभार ज्ञापित किया।

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

कांटाबांजी।

कांटाबांजी तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। तेरापंथी सभा, तेयुप व महिला मंडल के पदाधिकारियों की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ प्रशिक्षिकाओं एवं ज्ञानार्थियों द्वारा अर्हम वंदना से हुआ

सभा सचिव सुमित जैन, तेयुप अध्यक्ष मनीष जैन एवं मुख्य प्रशिक्षिका ममता जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गुरुदेव श्री तुलसी का स्वप्न – ज्ञानशाला – आज पूरे भारत में बच्चों में संस्कारों के बीजारोपण का कार्य कर रही है।

कांटाबांजी नगर में भी यह प्रवृत्ति सुव्यवस्थित रूप से संचालित हो रही है और प्रत्येक तेरापंथी परिवार के बच्चों को इसमें जोड़ने का आह्वान किया गया।

केंद्र के निर्देशानुसार ज्ञानार्थियों द्वारा शॉर्ट प्ले प्रस्तुत किया गया जिसकी तैयारी में प्रशिक्षिका बहन रितु जैन व वंदना अग्रवाल का विशेष योगदान रहा।

ई-ज्ञानशाला के अंतर्गत रक्षाबंधन की गतिविधि भी आयोजित की गई, जिसमें बच्चों ने संकल्पों के साथ भाग लिया।कार्यक्रम का कुशल संचालन संयोजिका स्मिता जैन ने किया।

आत्मा को उज्ज्वल और पवित्र करने का साधन है तपस्या

हैदराबाद।

तेरापंथ भवन सिकंदराबाद में आयोजित मासखमण तप अभिनंदन कार्यक्रम में डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि निर्जरा के बारह प्रकार बताए गए हैं, जिनमें से एक है अनशन अर्थात तपस्या। तपस्या आत्मा को उज्ज्वल और पवित्र करने वाला साधन है। यह कर्मों को क्षीण करती है और जीवन को आलोकित बनाती है।

साध्वीश्री ने स्पष्ट किया कि तपस्या का उद्देश्य न तो इहलोक-परलोक की प्राप्ति है, न सम्मान या प्रशंसा पाना, बल्कि इसका सच्चा उद्देश्य है – कर्म निर्जरा। आज के समय में जहां एक व्यक्ति दिनभर में कई बार भोजन करता है, वहीं सजोड़े मासखमण जैसी कठिन तपस्या करना आत्म साधना का महान कार्य है। इस अवसर पर आचार्य प्रवर, साध्वीप्रमुखाश्री तथा चरित्रात्माओं के संदेशों का वाचन क्रमशः सुशील संचेती, नमिता सिंघी, राहुल गोलछा, लक्ष्मीपत डूंगरवाल, वीरेंद्र घोषल आदि ने किया। अभिनंदन पत्र का वाचन हेमंत संचेती और लक्ष्मीपतजी ने किया।

एकता बैंगानी ने ग्यारह उपवास का प्रत्याख्यान किया। महिला मंडल तथा पारिवारिक जनों ने गीतिकाएं प्रस्तुत कर तपस्विनी की अनुमोदना की। कौशल्या जैन मारडपल्ली की बहनों ने मंगलाचरण किया। साध्वी दक्षप्रभा जी ने मधुर स्वर में गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि जैन साधना पद्धति में आश्रव को बंध और संवर को मोक्ष का हेतु माना गया है, किंतु संवर के साथ निर्जरा भी अनिवार्य है, और निर्जरा का श्रेष्ठ साधन तप है। साध्वी मेरुप्रभाजी ने अपने संबोधन में कहा कि तपस्या साधु का धन है और यह सभी के लिए अनुकरणीय है। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मेरुप्रभाजी ने कुशलतापूर्वक किया तथा आभार ज्ञापन सभा मंत्री हेमंत संचेती ने किया।

संयम है मोक्ष यात्रा का सुमार्ग

जसोल।

साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी बहनों का अभिनंदन कार्यक्रम पुराना ओसवाल भवन में रखा गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि दीक्षा जीवन का परम उत्कर्ष है। दीक्षा के साथ आयु नहीं, योग्यता को मापा जाता है। हमारे जैन दर्शन में ही नहीं, हर धर्म में सन्यास जीवन का महत्व आंका गया है। सन्यास आत्मा का दर्शन है, आत्मा का स्पर्शन है तथा साध्य और साधन की दूरी को पाटने वाला महाप्रणिधान है। यह चित्तशुद्धि एवं व्यवहार शुद्धि का उपक्रम है, जीवन के संरक्षण का संयोजक है और आत्मगुणों के संवर्धन की प्रयोगशाला है।

साध्वी कलाप्रभा जी ने कहा कि जीना हो तो ज्योति बनकर जीना, जीना हो तो मोती बनकर जीना, क्योंकि जगत में अंधकारमय जीवन जीना बहुत बड़ा अभिशाप है। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने कहा कि दीक्षा का लक्ष्य है आध्यात्मिक उत्थान, समतारस का पान, संस्कारों का संपोषण, कर्मों का शोषण एवं साधना–संस्कारों का संरक्षण। साध्वी पावनयशा जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि साधना-आराधना सफल तभी होगी जब हमारा उपशमभाव प्रबल होगा। दीक्षार्थी बहन साधना बांठिया ने कहा कि साध्य और साधन की शुद्धि ही संयम की विशिष्ट साधना है। संयम जीवन का दीपक है, जो हर समय टॉर्च की तरह साधक का मार्गदर्शन करता हुआ श्रेयस की ओर ले जाता है।

दीक्षार्थी बहन राजुल खटेड ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि शिखर कितना भी दूर हो, संकल्प मजबूत होना चाहिए।

मेरे मन में दीक्षा की भावना जगी तो परिवार में चिंता बढ़ने लगी। अनेक परीक्षाओं के बावजूद मेरा संकल्प अटल रहा और मुझे आज मनोरथ पूर्ण करने का सुअवसर मिला है।

ज्ञानशाला दिवस व पुरस्कार वितरण समारोह

नागपुर।

बच्चों में संस्कार निर्माण के लिए संचालित नागपुर ज्ञानशाला का ज्ञानशाला दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह तेरापंथ भवन में मनाया गया। प्रशिक्षिकाओं ने मधुर स्वर में भिक्षु अष्टकम से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका प्रमिला मालू ने बताया कि ज्ञानशाला गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा संजोई गई प्रयोगशाला है। अभिभावक जहां अपने बच्चों को हर प्रकार की शिक्षा देना चाहते हैं, वहीं उन्हें चाहिए कि अपने बच्चों को ज्ञानशाला अवश्य भेजें, ताकि बच्चों को व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ अच्छे संस्कारों का अर्जन हो सके। ज्ञान ग्रहण करना और ज्ञान प्रदान करना दोनों ही महत्वपूर्ण उपक्रम हैं। बच्चों के भीतर ज्ञान के अर्जन का प्रमुख माध्यम ज्ञानशाला है।

प्रशिक्षिका अरुणा नखत ने बताया कि ज्ञानशाला से बच्चों का मानसिक और सामाजिक विकास होता है। यहां बच्चों को सेवा, संस्कार और शिक्षा का ज्ञान दिया जाता है। बच्चों को जीवन विज्ञान, अनुशासित जीवन, नशामुक्त जीवन, सत्य बोलने की प्रेरणा, चोरी से बचना और व्यसन मुक्त जीवन जीने का मार्ग सिखाया जाता है।

ज्ञानार्थियों द्वारा जैन बालक की पहचान, नमस्कार मुद्रा, दैनिक जीवन शैली और महाप्रज्ञ अष्टकम पर सुंदर प्रस्तुतियां दी गईं। सुषमा डागा ने रोचक खेलों के माध्यम से बच्चों से शुभ संकल्प करवाए। विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया गया। 'सपनों को सच करती संस्कारशाला' विषय पर प्रशिक्षिकाओं ने सुंदर नाटिका प्रस्तुत की। Student of the Year Award श्रेयांशी जैन को प्रदान किया गया। ज्ञानशाला प्रभारी महेंद्र बोरड़, तेरापंथ सभा अध्यक्ष विजय रांका, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष नितेश छाजेड़, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम मंत्री विवेक पारख और झिनकार देवी डागा ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। ज्ञानार्थियों की भी उल्लेखनीय उपस्थिति रही। ज्ञानार्थियों एवं प्रशिक्षिकाओं को पुरस्कृत किया गया। सभी प्रशिक्षिकाओं का सराहनीय सहयोग रहा। संचालन प्रीति धारीवाल ने किया तथा प्रेमलता सेठिया ने आभार व्यक्त किया।

पृष्ठ 2 का शेष

उत्कृष्ट आराधना का...

वर्धमान के माता-पिता, जो पार्श्व-परंपरा के थे, अनशन स्वीकार किया और दोनों की जीवन यात्रा का क्रम संपन्न हुआ। वर्धमान ने गर्भावस्था में किए गए अपने संकल्प के पूरा होने पर चाचा सुपार्श्व और भाई नंदीवर्धन के पास गए और उनके सम्मुख बात रखी कि मुझे दीक्षा लेनी है।

वर्धमान से कहा गया कि अभी दो वर्ष तक राजघराने में राजकीय शोक चल रहा है, इस बीच दीक्षा आदि का आयोजन संभव नहीं है। वर्धमान ने यह बात स्वीकार कर ली। इन दो वर्षों में साधना का जीवन जीया। समय पूरा होने पर नौ लोकांतिक देवों ने वर्धमान के पास आकर दीक्षा लेने और धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने हेतु निवेदन किया। मृगसर कृष्णा दशमी के दिन ज्ञानखण्ड वन में तीसरे प्रहर पूर्वाभिमुख होकर पंचमुष्ठि लोचन किया और बेले के तप में 'सव्वं में अकरणिज्जं पावकम्मं' का उच्चारण करके सामायिक चारित्र ग्रहण कर लिया और अणगार बन गए।

आचार्य प्रवर ने भगवान के साधनाकाल, चंडकौशिक सर्प, शूलपाणि यक्ष, दस स्वप्न आदि का वृतांत सुनाते हुए कहा कि प्रभु ने साधना काल में विविध प्रकार की तपस्याएं कीं। बेले से कम तपस्या नहीं की। साढ़े बारह वर्ष के साधना काल में तीन सौ उनचास दिन मात्र भोजन किया। साधना काल के तेरहवें वर्ष में जंभिय ग्राम नगर में ऋजुबालिका नदी के किनारे, श्यामाक ग्रहपति के खेत में, शालवृक्ष के नीचे, बेले के तप में, गोदोहिका आसन में, दिन के अंतिम प्रहर, ग्रीष्मकाल, वैशाख शुक्ला दशमी, सुव्रत दिवस, विजय मुहूर्त, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र - इस समय प्रभु को केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हुआ। केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात लगभग तीस वर्षों तक प्रभु तीर्थंकर के रूप में विचरते रहे और अंतिम वर्षावास पावापुरी में किया। कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन प्रभु परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। प्रभु का कुल आयुष्य लगभग बहत्तर वर्ष का रहा।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के पश्चात मुख्य मुनिश्री महावीर कुमारजी ने भगवती संवत्सरी के महत्त्व की विवेचना की। पुनः आचार्यश्री ने तेरापंथ के आचार्यों के जीवन प्रसंगों का वर्णन किया। मुख्य मुनिप्रवर ने वर्तमान अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के कई जीवन प्रसंग श्रद्धालुओं के समक्ष प्रस्तुत किए। मुनि राजकुमारजी ने संवत्सरी के संदर्भ में सुमधुर गीत का संगान किया।

पृष्ठ 18 का शेष

जप, ध्यान और...

अब्रह्मचर्य के दोषों को बताते हुए कहा कि यह समस्त दोषों का मूल है और इसका सेवन कायर पुरुष करते हैं। जो व्यक्ति आत्मलीन रहता है वही सच्चा ब्रह्मचारी हो सकता है।

ध्यान दिवस पर अपनी अभिव्यक्ति देते हुए साध्वीप्रमुखाश्री ने कहा कि अपने आप को देखने का एक सशक्त माध्यम है ध्यान। जो व्यक्ति ध्यान करता है वही सुख की अनुभूति कर सकता है। जैन आगमों में चार प्रकार के ध्यान का वर्णन है - आर्त्त ध्यान, रौद्र ध्यान, धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान। प्रथम दो ध्यान अप्रशस्त और अंतिम दो प्रशस्त ध्यान हैं। हमें जीवन में आर्त्त ध्यान और रौद्र ध्यान से बचना चाहिए। मुनि मनन कुमार जी, मुनि राजकुमार जी, मुनि केशीकुमार जी ने विविध विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी। ध्यान दिवस पर साध्वी प्रफुल्लप्रभा जी, साध्वी श्रुतिप्रभा जी और साध्वी अवन्तिप्रभाजी ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पृष्ठ 20 का शेष

भाव विशुद्धि कर

इसके बाद आचार्यश्री ने साध्वी वर्याजी, समस्त साध्वी समाज से खमत खामणा किया। फिर समणी वृंद, मुमुक्षु वृंद और श्राविका समाज से खमत खामणा किया। तदुपरांत मुख्य मुनि प्रवर से, मुनिश्री धर्म रूचिजी स्वामी से खमत खामणा किया।

सभी साधुओं से खमत खामणा किया और समस्त श्रावक समाज से भी खमत खामणा किया। तत्पश्चात् आचार्यश्री ने बहिर्विहार में स्थित साधु-साध्वियों से खमत खामणा किया। अन्य धर्म-समुदाय के संतों, राजनीतिक लोगों से भी खमत खामणा किया। उपस्थित जनता ने आचार्यश्री को करबद्ध होकर खमत खामणा किया। श्रावक समाज की ओर से अरुण बैद ने आचार्यश्री व चारित्रात्माओं, समणी वृंद से खमत खामणा किया। इस प्रकार खमत खामणा के साथ पर्युषण महापर्व सुसंपन्न हुआ।

मासखमण तप का तपोभिनंदन

कालू।

स्थानीय तेरापंथ सभा भवन कालू में साध्वी उज्ज्वलरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा सहमंत्री चैनरूप बोथरा के मासखमण (31) तप का अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम दो चरणों में आयोजित हुआ। प्रथम चरण में आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के अंतर्गत आचार्य श्री भिक्षु की अनुशासन शैली के बारे में बताया गया।

द्वितीय चरण में चैनरूप बोथरा के मासखमण तप का तपोभिनंदन रखा गया। साध्वी उज्ज्वलरेखा जी ने कहा – "तप मंगल है, सबसे श्रेष्ठ है। तप छोटा सा शब्द है, परंतु इन दो शब्दों में शक्ति अणुबम से कम नहीं है। तेरापंथ धर्मसंघ में हुई विशाल तपस्याओं के बारे में बताते हुए कहा कि कालू की धरती पर भाइयों में प्रथम मासखमण हुआ है। तपस्या प्राणतत्व है, तपस्या से तीर्थंकर गौत्र का बंध होता है। तपस्या निस्वार्थ भाव से होनी चाहिए।

तप से आत्मा का कल्याण होता है, जीवन शुद्ध होता है और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। आज की भौतिकवादी दुनिया में जहां मनुष्य भोगों में उलझा हुआ है, वहां तप ही वह साधन है जो आत्मा को शांति और सच्चे सुख की ओर ले जाता है।"

उन्होंने कहा कि आज हमें सिर्फ तप की अनुमोदना नहीं करनी है, बल्कि स्वयं भी उनके मार्ग पर चलने की प्रेरणा लेनी है। साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन महासभा कार्यकारिणी सदस्य विनोद सिंघी ने किया। साध्वियों द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ कन्यामंडल की गीतिका के साथ हुआ। महिला मंडल द्वारा गीतिका व भावों की प्रस्तुति दी गई। तप के द्वारा तप का अभिनंदन ललित बोथरा, संगीता बोथरा, सरोज बोथरा और विनोद सिंघी ने किया।

एकांतर तप के क्रम में सरोज बोथरा, संगीता बोथरा और रंजु सिंघी, सरोज बोथरा द्वितीय का तथा एकासन तप में सरिता सांड का अभिनंदन किया गया। साथ ही तेरापंथ सभा द्वारा शिवरतन उपाध्याय और मनीषा सियाग को वर्षों से निस्वार्थ भाव से सेवा देने के लिए सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी हेमप्रभा जी ने किया।

बोलती किताब

मन का कायाकल्प

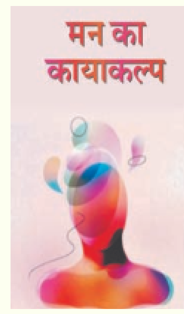

'सीधा मन पर अनुशासन हो जाए'—यह सुनने में बहुत अच्छा लगता है और तर्कयुक्त लगता है कि जब मन पर ही अनुशासन साधना है तो फिर इतनी लम्बी प्रक्रिया की क्या जरूरत है ? इतना लम्बा मार्ग क्यों ? संस्कृत व्याकरण में निष्णात होने वाले जानते हैं कि उन्हें केवल शब्दानुशासन ही नहीं पढ़ना पड़ता है, उन्हें इसके साथ-साथ छन्दोनुशासन, लिंगानुशासन, आदि-आदि भी पढ़ने पड़ते हैं । जब सारे अनुशासन हस्तगत हो जाते हैं तब शब्दानुशासन पढ़ने का कोई अर्थ होता है ।

मनुष्य को बदलने की जरूरत है, साथ-साथ बुद्धि को भी बदलने की जरूरत है । आज के युग को बुद्धि की जरूरत नहीं है, क्योंकि उसने इतने खतरे और समस्याएँ पैदा कर दीं कि उनसे आज पूरे जगत् में भय व्याप्त हो गया । इतना भय पहले कभी नहीं हुआ था । पुराने जमाने में तलवारों से लड़ा जाता था । फिर बन्दूकों से लड़ा जाने लगा । फिर तोपें आईं । आज स्थिति कुछ और ही बन गई । आज ऐसी विषैली गैसें आविष्कृत हुई हैं कि उनके प्रयोग से पूरे विश्व को १०-१२ मिनट में समाप्त किया जा सकता है । यह सारा कार्य बुद्धि का है, अबुद्धि ने कुछ भी खतरा पैदा नहीं किया है

सुख का साधन है—शरीर । शरीर को आराम मिलना चाहिए । शरीर पर पसीना नहीं आना चाहिए । शरीर पर धूप नहीं लगनी चाहिए । आदमी प्रत्येक बात को शरीर की दृष्टि से सोचता है । वह चेतना को गौण कर देता है । यदि यही बात होती समझदारी की तो आचार्यश्री एक दिन भी यहाँ नहीं आते । वे यहाँ आते हैं, चिलचिलाती धूप में । शरीर पसीने से लथपथ हो जाता है । पैर जलते हैं । धूप से सिर जल उठता है । फिर भी वे आते हैं । शरीर की चिन्ता करने वाला व्यक्ति कभी इतनी कड़ी धूप में नहीं आएगा ।

जो व्यक्ति अपने आपको नहीं देखता, वह दूसरों को देखता है । दूसरों को देखना महानता की अनुभूति की सबसे बड़ी बाधा है । क्रोध, अहंकार, माया, लोभ, ईर्ष्या, दोषारोपण, कलह, निन्दा—ये सब महानता के बाधक तत्त्व हैं । ये सब तत्त्व दूसरों को देखने से फलित होते हैं । जो दूसरों को कम देखता है, उसे क्रोध कम आएगा । जो दूसरों को अधिक देखता है, उसे क्रोध अधिक आएगा । नौकर ने काम ठीक नहीं किया, क्रोध से तिलमिला उठेगा । पत्नी ने बात नहीं मानी, क्रोध से उबल पड़ेगा । सहयोगी ने काम ठीक नहीं किया, चेहरा तमतमा उठेगा । जब-जब आदमी दूसरों को देखता है और जब-जब उसकी रुचि अकराती है, तब गुस्सा उभर आता है । क्रोध दूसरे को देखने का परिणाम है । अपने आपको देखना शुरू करें, क्रोध विलीन हो जाएगा ।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

सुयोग्य उत्तराधिकारी का....

किसी भी संगठन के विकास के लिए तटस्थ समीक्षा आवश्यक होती है। उजले पक्ष के साथ-साथ अंधेरे पक्ष को भी देखें और जहाँ कमजोरियां नजर आती हैं, उन्हें हटाएं, दूर करें और उनका परिष्कार करें। उनके उपायों पर चिंतन करके अच्छाई का विकास करने का प्रयास करना चाहिए।

हमारे धर्म संघ के आद्य आचार्य का यह तीन सौवां जन्म शताब्दी वर्ष चल रहा है। आज हम विकास महोत्सव मना रहे हैं, आगे 'योगक्षेम वर्ष' का भी कुछ हिस्सा इसी आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष में आ सकेगा। आचार्यश्री तुलसी के समय योगक्षेम वर्ष लाडनूं में आयोजित हुआ और आगामी योगक्षेम वर्ष भी लाडनूं में जैन विश्व भारती में ही पुनः आयोजित करने का निर्णय किया है। उसके लिए हमें आगे बढ़ना है और मर्यादा महोत्सव छोटी खाटू में करने के पश्चात् 06 फरवरी 2026 को जैन विश्व भारती में यथासंभव प्रवेश करने का निर्णय किया हुआ है। इस योगक्षेम वर्ष के आयोजन हेतु साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का अनुरोध था, उसी अनुरोध के अनुसार यह निर्णय लिया गया है। योगक्षेम वर्ष का प्रारंभ उन्नीस फरवरी 2026 को, जो कि परम पूज्य श्री कालूगणी का जन्म दिवस है और वे आचार्यश्री तुलसी तथा आचार्यश्री महाप्रज्ञ — दोनों गुरुओं के भी गुरु थे, उस दिन योगक्षेम वर्ष का शुभारंभ करने का निर्णय किया है। वर्ष 2027 के मर्यादा महोत्सव में योगक्षेम वर्ष की संपन्नता की घोषणा करने का भी निर्णय किया है। लगभग बारह महीने योगक्षेम वर्ष की कालावधि रहेगी। परम पूज्य गुरुदेव ने संघ में विकास की मंगल कामना करते हुए कहा कि समण श्रेणी का विकास हो, मुमुक्षुओं की संख्या बढ़े और मुमुक्षा भाव भी बढ़े। उपासक श्रेणी का अच्छा विकास हो रहा है और ज्ञानशाला का भी अच्छा क्रम चल रहा है। प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष चल रहा है, इसमें विदेश में भी अच्छा कार्य हुआ है। जीवन विज्ञान भी शिक्षा जगत में कार्य कर रहा है। सबमें समर्पण भाव रहे — आत्मा के प्रति और संघ के प्रति। चारित्रात्माओं में सेवा भावना रहे। भिन्न-सामाचारी की अग्लान भाव से सेवा होती रहे। समाज के श्रावक-श्राविकाओं और संस्थाओं द्वारा भी धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियां चलती रहें। पूज्य गुरुदेव द्वारा विकास महोत्सव से संदर्भित गीत का संगान किया गया और चातुर्मास संपन्नता के पश्चात् साधु-साध्वियों के विहार संबंधी निर्देश प्रदान किए। साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में तेरापंथ धर्म संघ को विकासशील धर्मसंघ की संज्ञा दी। विकास महोत्सव के संदर्भ में आचार्यश्री तुलसी के अवदानों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने साधु-साध्वियों के कार्यों को व्यापकता दी। उन्होंने अपने चिंतन, गहरी सोच और दूरदृष्टि से युग की नब्ज पर हाथ रखा और सकारात्मक परिवर्तनों के सिलसिले आरंभ किए। उनके द्वारा किए गए परिवर्तन तेरापंथ धर्मसंघ के विकास के लिए आधार सिद्ध हुए। साध्वी वृंद द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। विकास परिषद् के संयोजक मांगीलाल सेठिया एवं विकास परिषद् सदस्य पदमचंद पटावरी ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। मुनि कुमारश्रमणजी ने गृहमंत्री अमित शाह की आचार्यश्री महाश्रमणजी से हुई भेंट का सार प्रस्तुत किया। साध्वीवर्याजी ने विकास महोत्सव के संदर्भ में अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्यश्री तुलसी उभयानुकंपी व्यक्तित्व के धनी थे। वे स्व-विकास के साथ-साथ पर-विकास का भी चिंतन करते थे। वे सृजनशीलता में विश्वास रखते थे। उन्होंने अपने बहुमूल्य समय और अदम्य पुरुषार्थ का उपयोग सृजन और निर्माण में किया। धर्म संघ की विकास यात्रा में उनका बहुमूल्य समय लगा।

आचार्यश्री महाश्रमण योगक्षेम वर्ष व्यवस्था समिति-लाडनूं के पदाधिकारियों आदि के द्वारा आचार्यश्री के समक्ष योगक्षेम वर्ष के लोगो का अनावरण किया गया। आचार्यश्री ने इस संदर्भ में मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। प्रवास व्यवस्था समिति-लाडनूं के अध्यक्ष प्रमोद बैद, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़ ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

साधना के छोटे-छोटे....

इन चारों को जिसने जीत लिया, वह आत्मा को जीत लेता है। शत-प्रतिशत यदि सफलता न भी मिले तो कुछ विजय तो हमें प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति को जिसे नियंत्रित करने का चिंतन हो जाए, संकल्प हो जाए तो सफलता भी मिल सकती है। लक्ष्य निर्धारित करने के पश्चात् ही उस दिशा में पुरुषार्थ किया जा सकता है। छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान दें तो यह भी आत्म-युद्ध का अंग हो जाता है कि किसी पर मिथ्या आरोप नहीं लगाने का संकल्प कर लें, क्रोध में आकर किसी को गाली न देना, दिल दुखाने की भावना से किसी को कड़वी बात न कहना, नशा न करने का संकल्प करना—ये आत्म-युद्ध के छोटे उपाय हो सकते हैं। अणुव्रत में भी इन्हीं संकल्पों की बात है। भगवान महावीर ने कई जन्मों तक साधना की और अंतिम भव में बारह वर्षों से अधिक साधना करके इस युद्ध में विजय प्राप्त की। बारहवें गुणस्थान में मोहनीय कर्म का सर्वथा नाश हुआ, तेरहवें गुणस्थान में ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अन्तराय का नाश हुआ और सिद्धावस्था के प्रथम समय में चारों अघाती कर्मों का नाश करके परम विजय को प्राप्त किया। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा द्वि-दिवसीय 'तेरापंथ टास्क फोर्स' के सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस संदर्भ में तेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा व महामंत्री अमित नाहटा ने अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने उपस्थित संभागियों को पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए कहा कि व्यक्ति अपने सामर्थ्य का क्या प्रयोग करता है, यह महत्वपूर्ण बात होती है। शक्ति का सदुपयोग भी किया जा सकता है और दुरुपयोग भी। इसलिए सेवा के उपक्रम के साथ जुड़कर व्यक्ति को अपनी शक्ति का सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

जप, ध्यान और स्वाध्याय से समय को बनाएं सार्थक : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
26 अगस्त, 2025

पर्युषण पर्वाराधना का सातवां दिन। वीर भिक्षु समवसरण में तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, तीर्थंकर प्रभु महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के प्रसंग को गति प्रदान करते हुए फरमाया कि वर्तमान में अवसर्पिणी काल के इस भरत क्षेत्र में पांचवां अर-दुःषम अर चल रहा है। इस अर के प्रारंभ से पूर्व चतुर्थ अर दुःषम-सुषम अर की अन्तिम शताब्दी का समय था। चतुर्थ अर के लगभग पचहत्तर वर्ष और साढ़े आठ माह शेष रहे थे। उस समय आषाढ़ शुक्ला षष्ठी को बीस सागरोपम का आयुष्य भोगकर भगवान की आत्मा देवलोक से च्युत होती है। जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की वैशाली नगरी में स्थित ब्राह्मणकुंड ग्राम में ऋषभदत्त ब्राह्मण और उसकी भार्या देवानंदा थी। देवानंदा की कुक्षि में सिंह उद्भव की भांति भगवान महावीर की आत्मा विराजमान हो जाती है। ऋषभदत्त और देवानंदा भगवान पार्श्व के अनुयायी थे। आगम में कहा गया है कि भगवान महावीर से जुड़े हुए पांच महत्त्वपूर्ण प्रसंग हस्तोत्तरा नक्षत्र में हुए थे, हस्तोत्तरा नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र है। इसी नक्षत्र में च्यवन होता है और आत्मा गर्भस्थ होती है। देवानंदा की कुक्षि में वह आत्मा शिशु के रूप में पल रही है।

इन्द्र ने चिंतन किया कि तीर्थंकर महावीर का जन्म किसी और अच्छे स्थान पर होना चाहिए। वैशाली में ही सिद्धार्थ की भार्या त्रिशला क्षत्रियाणी की कुक्षि से भगवान का जन्म होना चाहिए। देवानंदा और त्रिशला दोनों गर्भवती थीं, इन्द्र ने देव को गर्भ संहरण कर दोनों के गर्भ की अदला-बदली करने हेतु आदेश दिया और गर्भ की तियांसवीं रात्रि आश्विन कृष्णा त्रयोदशी को गर्भ की प्रक्रिया संपन्न हुई।

गर्भ संहरण के पश्चात मां त्रिशला ने चौदह स्वप्न देखे। ऐसे अच्छे स्वप्न देखकर त्रिशला ने सिद्धार्थ को जगाकर अपने स्वप्नों की जानकारी दी। स्वप्न सुनकर सिद्धार्थ ने भी कहा कि तुमने उदार, कल्याण, आरोग्य, पुष्टि, दीर्घायुष्य, मंगलकारक स्वप्न देखे हैं, लगता है कोई उत्तम पुत्ररत्न हमें प्राप्त होने वाला है। सिद्धार्थ ने स्वप्न पाठकों को बुलाकर त्रिशला द्वारा देखे गए स्वप्नों के बारे में बताया और उनसे फलादेश बताने हेतु कहा। स्वप्न शास्त्रियों ने बताया कि त्रिशला की कुक्षि से उत्पन्न पुत्र जवानी में चतुर्थ चक्रवर्ती बनेगा अथवा त्रैलोक्यनायक धर्म चक्रवर्ती बनेगा। स्वप्न पाठकों को दक्षिणा देकर विदा किया गया।

एक दिन गर्भस्थ शिशु, जो विशिष्ट ज्ञानी है, ने सोचा कि मैं मां के पेट में हूं और मेरी चंचलता से मां को कष्ट होता होगा। मां को दुःख न हो, इसलिए अपने शरीर को स्थिर कर लिया। हलन-चलन बंद होने से मां के मन में बुरी कल्पना आ गई कि लगता है मेरा गर्भ कृत हो गया है। मां शोक सागर में निमग्न हो गई। महल में उत्सव का माहौल बंद कर दिया गया। शिशु ने देखा कि मेरे स्पंदन बंद करने से मां और अधिक दुःखी हो गई। शिशु ने पुनः स्पंदन शुरू किया और मां वापस आनंदित हो गई। गर्भस्थ शिशु ने सोचा कि मेरे थोड़ी देर हलन-चलन बंद कर देने से मां इतनी दुखी हो गई तो मेरे माता-पिता की विद्यमानता में यदि मैं दीक्षा हेतु घर छोड़ूंगा तो उन्हें कितना कष्ट होगा ! शिशु ने गर्भ में संकल्प कर लिया कि जब तक मेरे माता-पिता जीवित रहेंगे मैं दीक्षा नहीं लूंगा। सम्पूर्ण गर्भकाल का समय पूरा होता है और चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की मध्यरात्रि, हस्तोत्तरा नक्षत्र में ईसा पूर्व 599 और विक्रम पूर्व 542 में मां त्रिशला ने एक पुत्ररत्न को जन्म दिया। पूरे राजपरिवार में आनंद छा गया और इस संदर्भ में कई घोषणाएं की गईं। शिशु जब बारह दिन का हुआ तो नामकरण की चर्चा हुई। स्वजन वर्ग एकत्रित हुआ, सिद्धार्थ ने कहा कि जब से बालक आया है, हमारे राज्य में धन-धान्य, हिरण्य, सुवर्ण में वर्धमानता आई है, मेरा सुझाव है कि बालक का नाम वर्धमान रखा जाए। लोगों ने यह नाम सहर्ष स्वीकार किया। इस प्रकार आचार्य प्रवर ने भगवान महावीर के बाल्यकाल की अवस्था का सुन्दर विवेचन करते हुए बताया कि जीवन में तो कोई पुत्र मां की सेवा कर सकता है, पर महावीर के जीव ने गर्भकाल में ही संकल्प कर लिया कि मेरे कारण मां को कष्ट नहीं पड़े।

ध्यान दिवस अवसर पर आचार्य प्रवर ने फ़रमाया कि ध्यान और जप तो मानो भाई-भाई हैं। नवकार मंत्र की एक माला प्रतिदिन अवश्य होनी ही चाहिए। नवकार शुद्ध अध्यात्ममय पाठ है। आचार्य प्रवर ने श्वास के साथ मंत्र जप का प्रायोगिक प्रशिक्षण भी प्रदान करवाया। ध्यान के माध्यम से निर्विचारता तक चलें जाएं। जप, ध्यान और स्वाध्याय से समय को सार्थक करने का प्रयास करें।

आचार्य प्रवर के प्रवचन से पूर्व दस धर्मों में अन्तिम ब्रह्मचर्य धर्म पर मुख्य मुनिप्रवर ने चर्चा करते हुए कहा कि लज्जा, दया और संयम से संपन्न व्यक्ति ही ब्रह्मचर्य की साधना कर सकता है। जो व्यक्ति इन गुणों से संपन्न होते हैं, उनकी आत्मा क्रमशः शुद्धतम अवस्था की ओर बढ़ती जाती है। (शेष पेज 16 पर)

शक्ति होने पर हो उसके सदुपयोग का प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

अष्टमाचार्य कालूगणी के महाप्रयाण दिवस पर आचार्य श्री ने अर्पित की भावांजलि

कोबा, गांधीनगर।
29 अगस्त, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, ज्योतिपुंज, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को अपनी शक्ति का गोपन नहीं करना चाहिए। शक्ति का होना भी एक उपलब्धि है। दुनिया में शारीरिक, मानसिक शक्ति का महत्त्व है, और गृहस्थों के पास आर्थिक बल, जनबल, वचनबल आदि भी हो सकते हैं, परन्तु इन सबसे ऊपर आध्यात्मिक शक्ति अर्थात् धर्म की शक्ति होती है। यदि शक्ति नहीं है तो अच्छी शक्ति का विकास करें।

शक्ति उपलब्ध हो जाए तो उसकी तीन स्थितियां होती हैं—शक्ति का दुरुपयोग, सदुपयोग और अनुपयोग। शक्ति को गलत कार्यों में, पापकर्मों के बंध में लगाए तो वह शक्ति का दुरुपयोग होता है। शक्ति को अच्छे कार्यों में लगाए तो वह शक्ति का सदुपयोग हो जाता है। और एक व्यक्ति न शक्ति का दुरुपयोग करता है, न सदुपयोग, तो वह शक्ति का अनुपयोग हो जाता है।

आज भाद्रव शुक्ला षष्ठी है। हमारे धर्मसंघ के आठवें आचार्यश्री परम पूज्य कालूगणी का महाप्रयाण दिवस है। वे राजस्थान के छापर नामक कस्बे में जन्मे थे। महापुरुष की जन्मस्थली भी मानो गौरवान्वित हो जाती है। वे छोटी अवस्था में आचार्यश्री मघवागणी के पास दीक्षित हो गए। मुनि कालू ने संस्कृत भाषा के अध्ययन में बहुत श्रम किया। मघवागणी के एक कृपापात्र शिष्य के रूप में वे रहे। मघवागणी के महाप्रयाण के बाद आचार्य पद पर माणकगणी और डालगणी रहे। सप्तम आचार्य डालगणी ने मुनि कालू जी 'छापर' को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। डालगणी के महाप्रयाण के बाद गुप्त पत्र के आधार पर मुनि कालू जी छापर आचार्य पद पर आरूढ़ हुए।

लगभग तैंतीस वर्ष की आयु में वे तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य बने और उनका लगभग सत्ताईस वर्षों का आचार्यकाल रहा। आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ उन्हीं के पास दीक्षित हुए। कालूगणी ने अपने आचार्यकाल में एक चातुर्मास राजस्थान से बाहर हरियाणा के भिवानी में किया था, शेष सभी चातुर्मास राजस्थान में ही हुए। उनका विहार क्षेत्र अधिकांशतः राजस्थान रहा। हमारे धर्मसंघ में संस्कृत भाषा के विकास में परम पूज्य कालूगणी का बहुत योगदान रहा। उनका अंतिम चातुर्मास वि.सं. 1993 में मेवाड़ के गंगापुर में हुआ। स्वास्थ्य में गिरावट आई और उन्होंने मुनि तुलसी को गंगापुर में अपना युवाचार्य बनाया। आज से 89 वर्ष पूर्व भाद्रव शुक्ला षष्ठी के दिन सायंकाल के समय उन्होंने महाप्रयाण किया। आज आचार्यश्री कालूगणी की पुण्यतिथि है। आचार्यश्री कालूगणी का जीवनकाल लगभग साढ़े उनसठ वर्ष का रहा। उन्होंने राजस्थान के अतिरिक्त हरियाणा और मालवा प्रदेश की यात्राएं कीं, विहार भी किया, दीक्षाएं प्रदान कीं और संस्कृत भाषा के विकास का प्रयास किया। इस प्रकार अपनी शक्ति का उन्होंने अच्छा सदुपयोग किया था। आदमी को अपनी शक्ति का गोपन नहीं करना चाहिए और शक्ति होने पर उसका सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए, दुरुपयोग से बचना चाहिए।

कार्यक्रम में पृथ्वीराज कांकरिया (राजस्थान हॉस्पिटल) ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। ठाणे ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति देकर संकल्पों का उपहार अर्पित किया, जिस पर आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

अंधेरी ओरी : प्रथम प्रवास

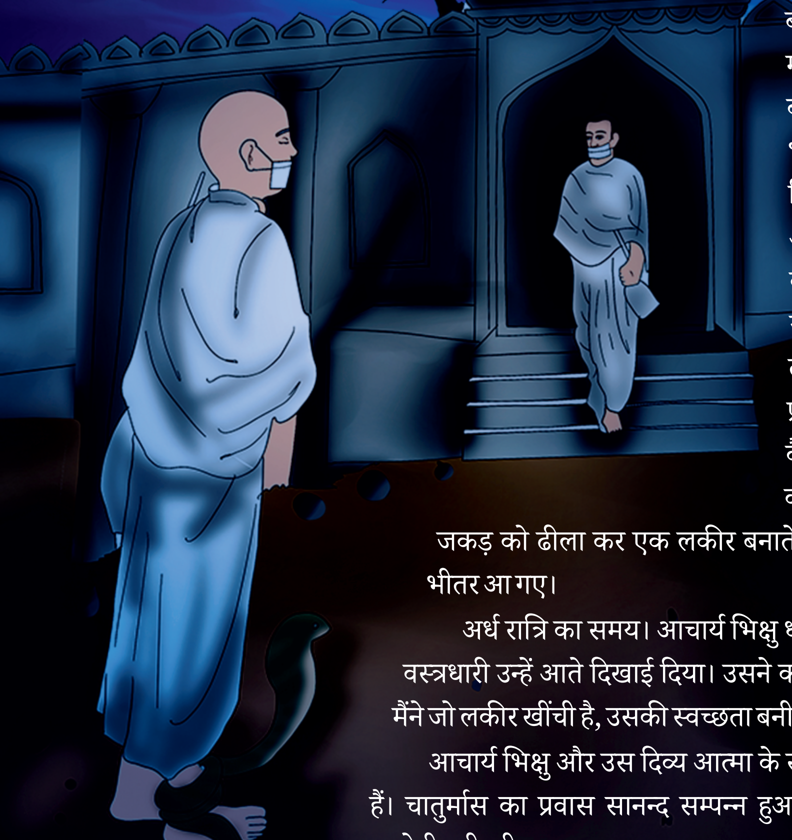

चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर। उसमें एक कोठरी, न प्रकाश और न हवा का प्रवेश। इसलिए उसे अंधेरी ओरी (अंधकारपूर्ण कोठरी) कहा जाता था। आचार्य भिक्षु वहां चतुर्मास बिता रहे थे। मुनि भारमलजी उस समय तेरह वर्ष के थे। वे रात के समय देहचिंता की निवृत्ति के लिए बाहर गए, उस समय एक सर्प आया और उनके पैरों में लिपट गया। वे कायोत्सर्ग की मुद्रा में वहीं खड़े रहे। उनके आने में विलम्ब हुआ जान आचार्य भिक्षु बाहर आए। मुनि भारमलजी को मौन और शांत खड़े हुए देख कर बोले– भीतर आ जाओ। मुनि भारमलजी बोले– पैरों में सर्प लिपटा हुआ है, भीतर कैसे आऊं? आचार्य भिक्षु सर्प को सम्बोधित कर बोले– देवानुप्रिय! अगर हमारे यहां रहने से आपको कष्ट होता हो तो हम अन्यत्र चले जाएं। इस प्रकार छोटे साधु के पैर में लिपटना कैसे उचित होगा? आचार्य भिक्षु का यह वचन सुनते ही सर्प पैर की जकड़ को ढीला कर एक लकीर बनाते हुए चला गया। मुनि भारमलजी भीतर आ गए।

अर्ध रात्रि का समय। आचार्य भिक्षु ध्यान की मुद्रा में बैठे थे। एक श्वेत वस्त्रधारी उन्हें आते दिखाई दिया। उसने कहा– आप समाधिपूर्वक यहां रहें। मैंने जो लकीर खींची है, उसकी स्वच्छता बनी रहे।

आचार्य भिक्षु और उस दिव्य आत्मा के सम्पर्क की अनेक गाथाएं प्रचलित हैं। चातुर्मास का प्रवास सानन्द सम्पन्न हुआ। वह दिव्य आत्मा सदा उनकी सहयोगी बनी रही।

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

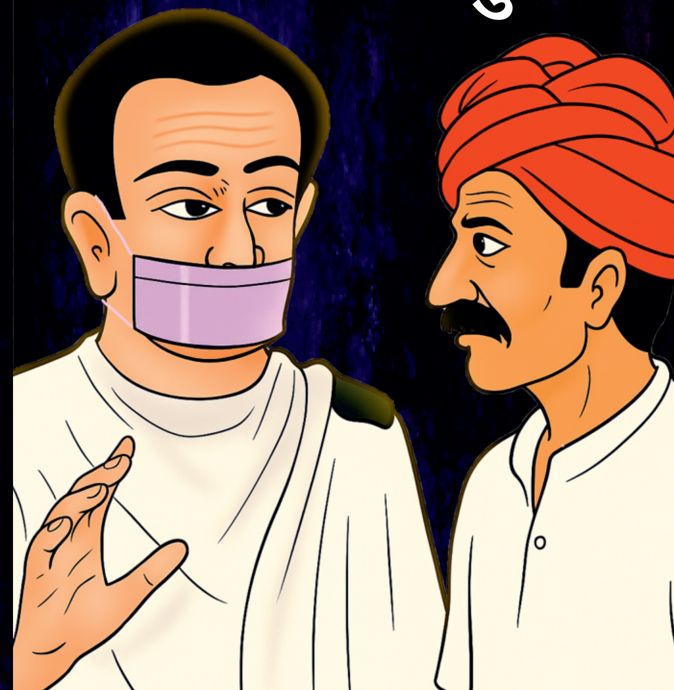

सम्पत्ति मिलने से कौन-सा ज्ञान आ जाता है?

आऊवा में उत्तमोजी ईराणी ने स्वामीजी से कहा– 'भीखणजी! तुम देवालय का निषेध करते हो पर पुराने जमाने में तो बडे-बड़े लखपति और करोड़पति लोगों ने देवालय बनाए थे।'

तब स्वामीजी बोले– 'तुम्हारे घर में पचास हजार की सम्पत्ति होने पर देवालय कराओगे या नहीं?'

वह बोला– 'मैं कराऊंगा।'

तब स्वामीजी ने पूछा– 'तुम्हारे में जीव के भेद, गुणस्थान, उपयोग, जोग, लेश्या कितनी?'

तब वह बोला– 'यह तो मैं नहीं जानता।'

तब स्वामीजी बोले– 'ऐसे ही समझदार पहले हुए होंगे! सम्पत्ति मिलने मात्र से कौन-सा ज्ञान आ जाता है।'

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

प्रत्याख्यान का महत्व

प्रत्याख्यान जैन धर्म की साधना है। प्रत्याख्यान से व्रत का लाभ मिलता है। यही वह श्रेष्ठ मार्ग है, जो कर्मों के विरोध से संवर की ओर ले जाता है। प्रत्याख्यान और संवर में कार्य-कारण संबंध है। प्रत्याख्यान के भंग (विकल्प) होते हैं।

संपूर्ण त्याग तीन करण और तीन योग से होता है। श्रावक करण और योग को समझकर संवर धर्म का उत्तम लाभ उठा सकता है। कृत, कारित और अनुमोदन– ये तीन करण तथा मन, वचन और काय– ये तीन योग के माध्यम से प्रत्याख्यान व्रत को जीवन की सफलता की कुंजी बनाते हैं। करण और योगपूर्वक त्याग करना धार्मिकता की कसौटी है। जो करण और योग को नहीं जानता, वह आत्मोदय से वंचित रह जाता है।

क्या आप जानते हैं?

लवंग, चीनी आदि से पानी का वर्ण, गंध, रस आदि परिवर्तित हो जाता है तो उसे अचित्त माना जाता है। परन्तु उसे तपस्या में नहीं पीएं।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह संघ गान कंठस्थ करने का प्रयास करें।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भाव विशुद्धि कर क्षमापना करने वाला जीव बन जाता है निर्भय : आचार्यश्री महाश्रमण

क्षमापना दिवस पर क्षमामूर्ति ने किया क्षमापना के लिए उत्प्रेरित

कोबा, गांधीनगर।
28 अगस्त, 2025

आठ दिनों के महापर्व पर्युषण के शिखर दिवस भगवती संवत्सरी के बाद का दिवस क्षमापना दिवस परम पावन युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सन्निधि में आयोजित हुआ। आचार्यश्री ने वृहद् मंगल पाठ समुच्चारित कर विशाल जनमेदिनी में नवीन ऊर्जा का संचार किया।

क्षमापना दिवस से संदर्भित कार्यक्रम में खमत खामणा के क्रम में तेरापंथी सभा अहमदाबाद के अध्यक्ष अर्जुनलाल बाफना, प्रेक्षा विश्व भारती के अध्यक्ष भैरूलाल चौपड़ा, निर्मल बोथरा, तेरापंथ महिला मंडल (अहमदाबाद) अध्यक्षा सुशीला खतंग, तेरापंथ युवक परिषद् (अहमदाबाद) के अध्यक्ष प्रदीप बागरेचा, पारमार्थिक शिक्षण संस्था की ओर से बजरंग जैन, जय तुलसी फाउंडेशन की ओर से बाबूलाल सेखानी, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, अमृतवाणी के अध्यक्ष ललित दुगड़, टी.पी.एफ. की ओर से जागृत संकलेचा, प्रेक्षा इंटरनेशनल व आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति अहमदाबाद के अध्यक्ष अरविंद संचेती ने आचार्यश्री सहित समस्त चारित्रात्माओं से खमत खामणा किया।

मुख्य मुनिश्री महावीर कुमारजी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुत विभाजी व साध्वीवर्या श्री सम्बुद्धयशा जी ने क्षमापना दिवस के संदर्भ में अपनी अभिव्यक्ति दी। तदुपरांत साध्वीप्रमुखाजी सहित समस्त साध्वी समाज ने सविधि वंदन कर आचार्यश्री से खमत खामणा किया।

महातपस्वी शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने इस अवसर पर पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए कहा कि आगम में प्रश्न किया गया कि—भगवन! क्षमापना से जीव को क्या मिलता है? उत्तर दिया गया कि क्षमापना से प्रह्लाद भाव पैदा होता है, वैर भाव विनष्ट होता है। प्रह्लाद भाव पैदा होने से सभी प्राणों, भूतों, जीवों के प्रति मैत्री का भाव उत्पन्न हो जाता है। मैत्री भाव से आत्मा सुवासित हो जाती है और भाव विशोधि होती है। भाव विशोधि करके क्षमापना करने वाला जीव निर्भय बन जाता है।

जैन शासन में जैन श्वेतांबर तेरापंथ परंपरा में पर्युषण व संवत्सरी का क्रम चलता है। हमने सात दिन और भगवती संवत्सरी के दिन कुल आठ दिनों की आराधना की। आज उसके नवें दिन खमत खामणा का दिन है और अष्टाह्निक कार्यक्रम के समापन का भी दिन है। बारह महीनों में भगवती संवत्सरी के दिन भी यदि कोई व्यक्ति वैर की गांठ न खोले तो उसके सम्यक्त्व खो देने या नष्ट होने की स्थिति बन सकती है। संवत्सरी के दिन सबसे खमत खामणा कर लेना चाहिए और मन में गांठ नहीं रखनी चाहिए।

आज का खमण खामणा दिवस कल का परिशिष्ट माना जा सकता है और आज प्रैक्टिकल खमत खामणा का दिन है। हम सभी समूह में जीते हैं, समाज में रहते हैं। अनेक लोगों से बोलने का कार्य पड़ सकता है। नेतृत्स करने के संबंध में भी चतुर्विध धर्मसंघ से व्यवहार होता है। साध्वी प्रमुखाश्री जी से खमत खामणा करते हुए पूज्य गुरुदेव ने कहा कि आपसे अनेकानेक विषयों पर चर्चा, वार्ता, निर्णय-निर्देश, चिंतन आदि में कुछ भी कठोर व्यवहार हो गया हो तो खमत खामणा। (शेष पेज 16 पर)

आचार्यश्री महाश्रमणजी : झलकियां

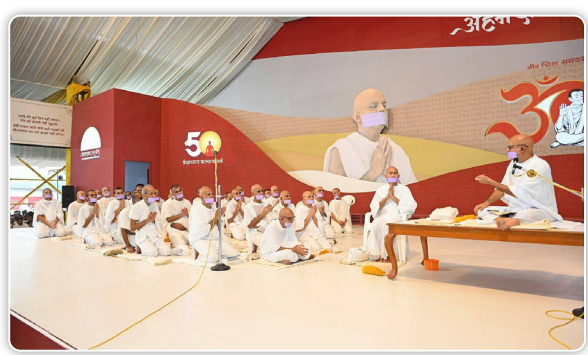

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।